सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

मार्च, 2018 वर्ष 17 अंक 01

वर्ष सत्तरह शुरूअ़ हुआ

सुनो पाठको प्यारे मित्रो बातें सच्चा राही की
वर्ष सत्तरह शुरूअ़ हुआ है, होगी मदद इलाही की
देश हमारा करे तरक़्क़ी, देश में अब खुशहाली हो
हर घर में हो शौचालय और घर घर बिजली पानी हो
पके गैस पर खाना अपना, लकड़ी का अब धुवां न हो
लकड़ी लाएँ चूलहा फूंकें, कष्ट ये अब तो यहां न हो
अनपढ़ कोई रहे न यां पर, हर कोई अब इल्म पढ़े
इल्म पढ़े और हुनर भी सीखे, और तरक़्क़ी खूब करे
रोज़ सवेरे दौड़ लगाएं, या फिर टहलें तेज़ क़दम
वरज़िश वाले सिहत से रहते, हरदम रहते ताज़ा दम
साफ़ सफ़ाई घर घर हो, चर्चा हो जन सेवा की
चर्चा हो जन सेवा की और पूजा बस निर्माता की
हम तो उसको अल्लाह कहते जो चाहो तुम कहो उसे
गाड कहो या ईश्वर कह लो पर ना भूलो कभी उसे

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें। बराये करम पैसा जमा हो जाने के बाद दफ़्तर के फोन नं0 या ईमेल पर खरीदारी नम्बर के साथ इत्तिला ज़रूर दे दें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। **A/c. No. 10863759642 IFS Code: SBIN000125**

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
भारत के मुसलमान और नमाज़	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	11
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	15
नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत	मौलाना मंजूर नोमानी रह0	18
सात चीज़ों से पहले अच्छे	मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	25
दुन्या की वास्तविकता और	मुहम्मद अमीन हसनी नदवी	28
क्या हम नबीये पाक सल्ल0	मौलाना जाफर मसऊद नदवी	32
एलाने मिलकियत		35
एक औरत का दर्द भरा खत	इदारा	36
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद–

और अगर किसी औरत को अपने पति की ओर से उखड़े रहने या बेरुखी का डर हो तो इसमें उन दोनों के लिए कोई हरज़ नहीं कि वे आपस में कुछ सुलह कर लें और सुलह बेहतर है और स्वभाव में तो लालच आगे–आगे रहती है और अगर तुम भले काम करो और परहेज़गारी रखो तो बेशक अल्लाह तुम्हारे सब कामों की ख़बर रखता है[(1)](128) और तुम जितना भी चाहो पत्नियों के बीच हरगिज़ बराबरी नहीं कर सकते तो तुम्हारा झुकाव पूरी तरह एक ओर न रहे कि दूसरी को अधर में लटकती छोड़ दो और अगर तुम सहमति बना लो और परहेज़गारी करो तो बेशक अल्लाह बहुत माफ करने वाला बड़ा ही दयालु है[(2)](129) और अगर दोनों अलग हो जाएं तो अल्लाह हर एक को अपनी गुंजाइश से बेनियाज़ कर देगा और अल्लाह बड़ी गुंजाइश वाला बड़ी हिकमत वाला है[(3)](130) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जिन लोगों को तुम से पहले किताब दी जा चुकी है हम उन से भी कह चुके और तुम से भी कि अल्लाह से डरते रहो और अगर तुम इनकार करने वाले हुए तो बेशक जो भी आसमानों में और जो भी ज़मीन में है वह सब अल्लाह का है और अल्लाह तो बेनियाज प्रशंसनीय है(131) और अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है और काम बनाने के लिए अल्लाह काफ़ी है[(4)](132) और अगर वह चाहे तो ऐ लोगो! वह तुम सब को चलता कर दे और दूसरों को ले आए और अल्लाह को इस चीज़ पर पूरा सामर्थ्य प्राप्त है[(5)](133) जो कोई दुन्या का इनआ़म चाहता हो तो अल्लाह के पास तो दुन्या व आख़िरत दोनों जगह का इनआ़म है और अल्लाह खूब सुनता, खूब नज़र रखता है[(6)](134) ऐ ईमान वालो! इन्साफ़ पर क़ायम रहने वाले, अल्लाह के लिए गवाही देने वाले बनकर रहो चाहे वह खुद तुम्हारे ख़िलाफ पड़े या माँ–बाप और निकट संबन्धियों के खिलाफ़ पड़े, अगर कोई धनी है या मोहताज है तो अल्लाह इन दोनों का उनसे अधिक शुभचिंतक है तो तुम इच्छा पर मत चलो कि इन्साफ़ न करो और अगर तुम तोड़–मरोड़ करोगे या नज़र अंदाज़ कर जाओगे तो अल्लाह तुम्हारे कामों की खूब ख़बर रखने वाला है[(7)](135) ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके पैग़म्बर

पर और उस किताब पर जो उसने अपने पैग़म्बर पर उतारी और उस किताब पर जो उसने पहले उतारी विश्वास पैदा करो और जिसने अल्लाह और उसके फरिश्तों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और आख़िरत के दिन को न माना वह दूर जा भटका(136) बेशक वे लोग जो ईमान लाए फिर इनकार किया फिर ईमान लाए फिर इनकार में बढ़ते चले गए अल्लाह उनको हरगिज़ माफ़ करने वाला नहीं और न ही उनको रास्ता देने वाला है[8](1137) मुनाफ़िकों को खुशखबरी दे दीजिए कि निश्चित ही उनके लिए दुखदाई अज़ाब है(138) जो ईमान वालों को छोड़ कर काफिरों को अपना दोस्त बनाते हैं, क्या उनके पास वे इज़्ज़त की तलाश में हैं बस इज़्ज़त तो सब की सब अल्लाह ही के लिए है(139) और वह तो तुम पर किताब में यह बात उतार चुका कि जब भी तुम अल्लाह की आयतों का इनकार होते और मज़ाक बनते सुनो तो ऐसों के साथ मत बैठो जब तक वे उसके अलावा दूसरी बात में न लग जाएं वरना तो तुम भी उन्हीं की तरह हो जाओगे, बेशक अल्लाह मुनाफ़िकों और काफ़िरों को एक साथ दोज़ख में इकट्ठा करके रहेगा[9](140)।

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. औरत बेरुखी महसूस करे और वह अपने कुछ अधिकारों को छोड़ कर सुलह सफ़ाई के साथ रहना चाहे तो यह अलग होने से बेहतर ही है स्वभाव में लालच होता है मर्द बोझ हलका महसूस करेगा तो राज़ी हो जाएगा लेकिन मर्दों को चाहिए कि वे अच्छा व्यवहार करें और परेशान न करें।

2. अगर कई पत्नियाँ हैं तो सब में बराबरी अनिवार्य है हां हार्दिक संबंध पर पकड़ नहीं है, यह न हो कि जिससे संबंध नहीं है उसको यूं ही छोड़ रखे न अधिकार दे न अलग करे।

3. अगर निभ न रही हो तो अलगाव का भी प्रावधान है अल्लाह सबका काम बनाने वाला है।

4. तीन बार कहा गया कि अल्लाह ही का है जो ज़मीन व आसमान में है, पहली बार उसकी विशालता का उल्लेख है दूसरी बार उसकी बेनियाज़ी का, अगर तुम नहीं मानते तो उससे उसका क्या नुकसान होगा वह हर चीज़ से बेनियाज़ है यानी उस को किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं और तीसरी बार काम बनाने का, अगर तुम तक़्वा अपनाओ तो वह तुम्हारा काम बनाता चला जाएगा।

5. इसमें भी उसकी बेनियाज़ी का बयान है।

6. अगर तुम अल्लाह की आज्ञा का पालन करो तो तुम्हें दीन व दुन्या की नेअ़मतें हासिल हों, तो उससे बढ़ कर मूर्ख कौन होगा जो दुन्या के लिए आखिरत को गंवाए।

7. गवाही इन्साफ़ के साथ दो और उसमें अमीर व ग़रीब का भेद भी मत करो और न अपना व पराया देखो, जो बात सच हो वह कह दो, अगर उसमें किसी ग़रीब का नुकसान हो भी रहा हो तो अल्लाह उनका उनसे अधिक शुभचिंतक है और

शेष पृष्ठ....14 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करने और बिना कारण दाहिना हाथ खराब करने की मुमानियतः–

हज़रत अबू क़तादा रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम में से कोई शख्स पेशाब करे तो अकारण दायां हाथ खराब न करे ना दाहिने हाथ से इस्तिन्जा करे और ना बर्तन में पीते समय सांस ले।

(बुखारी मुस्लिम)

एक पैर में जूता या मोजा पहन कर चलने और बिना कारण खड़े हो कर पहनने की मुमानियतः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि कोई एक जूता पहन कर न चले फिरे पहने तो दोनों पांव में वरना दूसरा भी उतार दे। (बुखारी–मुस्लिम)

एक रिवायत के शब्द हैं कि दोनों को नंगा कर दे।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि मैंने हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना है कि अगर तुम्हारे जूते का तस्मा (जूते का फीता) टूट जाये तो दूसरा जूता पहन कर न चलो जब तक उस को दुरुस्त न कर लो। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खड़े खड़े जूता पहनने से मना फरमाया है।

(अबू दाऊद)

सोते समय आग बुझा देने का आदेशः–

हज़र इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम सोने का इरादा करो तो फिर आग जलती हुई न छोड़ो।

(बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़ि0 से रिवायत है कि मदीना में एक घर घर वालों समेत रात को जल गया, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब इसकी खबर मिली तो आप ने फरमाया, यह आग तुम्हारी दुश्मन है जब तुम सोने का इरादा करो तो उस को बुझा दिया करो। (बुखारी–मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बर्तन को ढक दो, मशकों का मुंह बांध दो, दरवाजे बंद कर दो और चराग बुझा दो, बेशक शैतान न मशक का मुंह खोल सकता है ना दरवाज़ा और बर्तन अगर बर्तन ढकने की कोई चीज़ ना हो तो अल्लाह का नाम ले कर तिनका ही रख दिया करो, और चूहा घर को जला देता है।

तकल्लुफ की मुमानिअ़तः–

अनुवादः *"कह दो कि ना मैं तुम से इसकी मजदूरी तलब करता हूं और ना तकल्लुफ (बनावट) करने वालों में से हूं।*

(सूरः साद–5)

शेष पृष्ठ....17 पर

भारत के मुसलमान और नमाज़

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

इस्लाम में नमाज़ का बड़ा महत्व है, अल्लाह को एक मान लेने और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का रसूल मान लेने अर्थात तौहीद व रिसालत के स्वीकार कर लेने के पश्चात जो सबसे अनिवार्य कार्य है वह नमाज़ द्वारा अल्लाह की उपासना है, बताया गया कि कुफ़्र अर्थात नास्तिकता और इस्लाम के बीच नमाज़ ही का अन्तर है, अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कथन है कि हमारे और इस्लाम में प्रवेश करने वालों के बीच नमाज़ ही का वचन है, पस जिसने नमाज़ छोड़ी उसने कुफ़्र किया अर्थात, नास्तिक हो गया, जानबूझ कर किसी आपत्ति के बिना नमाज़ छोड़ने वाले को इमाम मालिक, इमाम शाफई और इमाम अहमद बिन हम्बल कहते हैं कि उसको क़त्ल कर देना चाहिए उसको इस संसार में रहने का अधिकार नहीं है इसलिए कि उसकी संगत से समाज विकृत होगा, और इमाम अबू हनीफा रह0 का कहना है कि उसको बन्दी बनाया जाये यदि वह अपने इस महा पाप से तौबा न करे तो उसको मार की सज़ा दे कर जेल में बन्द कर दिया जाए यहां तक कि वह तौबा करे और प्रतिबन्ध से नमाज़ पढ़ने का वचन दे। परन्तु यह सज़ाएं देने का अधिकार इस्लामिक शासन को है।

नमाज़ छोड़ने वाले के लिए हदीस में और बहुत सी दण्ड की चेतावनियां हैं, और पवित्र कुर्आन में तो स्पष्ट शब्दों में कह दिया गया है कि ''नमाज़ भली भांति पढ़ो और मुशरिकों में से न हो जाओ'' (अर—रूमः31)।

नमाज़ पढ़ने के लिए मस्जिद बनाने का आदेश हुआ और अल्लाह का शुक्र है कि भारत में जहां मुसलमान हैं वहां मस्जिदें हैं, मस्जिदों में प्रतिदिन पाँच बार अज़ान का आदेश हुआ, जिसमें अज़ान कहने वाला जहां ऊँची आवाज़ में तौहीद व रिसालत का एलान करता है वहीं मुसलमानों को नमाज़ के लिए बुलाता है, कहता है ''आओ नमाज़ के लिए, आओ कल्याण प्राप्त करने के लिए''।

इन बातों से ज्ञात हुआ कि एक मुसलमान के लिए नमाज़ पढ़ना अति आवश्यक है, नमाज़ न पढ़ने वाला अपने आप को मुसलमान कहने का अधिकार नहीं रखता है, परन्तु हमारे भारत के मुसलमानों का हाल क्या है? इस को देख कर और सोच कर प्राण थर्रा उठते हैं, अल्लाह अपनी कृपा से वंचित न करे।

पूरे भारत के मुसलमानों के विषय में कुछ कहना तो मेरे लिए कठिन है, परन्तु उत्तर प्रदेश के अधिकांश नगरों और बहुत से कस्बों का भ्रमण किया है और जहां गया हूं मेरा सम्बन्ध मस्जिदों ही से रहा है, बड़े खेद के साथ कहना पड़ता

है कि हर स्थान पर मैंने 80 प्रतिशत मुसलमानों को भी नमाज़ का पाबन्द ना पाया, मैं फैज़ाबाद जनपद के गाँव ''पूरा रज़ा खाँ'' का निवासी हूं, यह गांव पहले बाराबंकी जनपद में था, अब फैजाबाद जनपद में है, मेरे गाँव के आसपास बहुत से गाँवों में मुसलमान बसते हैं, बहुत से गाँवों में रिश्तेदारियां भी हैं, मैंने सभी गाँवों का दौरा किया और पता लगाया तो मुझे बाज़ गाँवों में एक भी नमाज़ी न मिला, यह बात सन् 1950 की है, मस्जिदों में नमाज़ के वक़्त कहीं चार पाँच नमाज़ी तो कहीं सात आठ, जब कि गाँवों में सैकड़ों व्यस्क मुसलमान मौजूद होते थे।

मैं बड़े अफसोस के साथ अपने घर और गाँव पर नज़र डालता हूं तो मेरे पर दादा हाजी शमशेर अली नमाज़ पढ़ते थे परन्तु उनके चार बेटों में केवल एक बेटा हाजी अब्दुलग़नी नमाज़ के पाबन्द थे, घर में कोई औरत भी नमाज़ की पाबन्द ना थी मेरे दादा के छः चचेरे भाई थे उनमें से कोई नमाज़ी न था, न उनके घर की औरतें नमाज़ पढ़तीं थीं गाँव में तीन खां साहिबों के घर थे और एक घर मुसलमान गड़रिया का था, एक घर मेरे नाना का था मगर कोई भी नमाज़ी न था ना मर्द ना औरतें, अलबत्ता मर्द रुदौली ईदगाह में ईदैन की नमाज़ पढ़ आते, यह सारा हाल सन् 1950 ई0 का है।

सन् 1948 ई0 में मैं ने मिडिल पास किया बाज़ असातिज़ा (गुरुजनों) की प्रेरणा से मैं नमाज़ का पहले ही से पाबन्द था अब अपने घर वालों और गांव वालों को भी नमाज़ पढ़ने की ओर लाने का प्रयास किया, मेरे वालिद बहुत कम पढ़े लिखे थे केवल घर की शिक्षा थी, किसी स्कूल में ना पढ़ा था, वालिदा अनपढ़ थीं, वालिद साहिब नमाज़ पढ़ना जानते थे मगर नमाज़ पढ़ते ना थे, मैंने कुर्आन की कुछ सूरतें, अत्तहीयात और दुरूद शरीफ वालिद साहिब ही से याद किया था, मैं कुर्आने मजीद पढ़ा हुआ न था परन्तु उर्दू की मदद से अटक अटक कर पढ़ लेता था, मेरी बीवी कुर्आन पढ़ी हुई थी उसने मेरी दोनों बहनों को कुर्आन पढ़ाया और नमाज़ सिखाया, मेरी वालिदा को कुछ सूरतें याद थीं वह नमाज़ पढ़ना जानती थी मगर नमाज़ पढ़ती न थीं, मैंने कोशिश कर के घर के सब लोगों को नमाज़ पर लगाया। पुरानी गिरी हुई मस्जिद नये सिरे से बनाई गयी और जमाअ़त से नमाज़ होने लगी, मगर जमाअ़त में कभी दो कभी तीन नमाज़ी होते थे। खानदान के लोग नमाज़ की ओर राग़िब न हो सके मस्जिद में जुमे की नमाज़ भी पढ़ी जाने लगी, लोग जुमे की नमाज़ में तो आते मगर पांचों वक्त की नमाज़ न पढ़ते, मैंने अपने लड़कों और लड़की को खुद पढ़ाया, दो लड़के और एक भाई नदवतुल उलमा से नदवी हुए। उनमें से एक अल्लाह की रहमत में जा बसा, दूसरे को गांव की मस्जिद में इमाम कुकर्रर कर दिया, और एक दीनी

मदरसा खोल कर उसके हवाले किया। इस तरह गांव का माहौल दीनी हुआ, गांव के कई लोगों ने हज किया वह नमाज़ के पाबन्द हैं, कई नव जवान अरब मुल्कों में नौकरी पर लगे उनमें भी दीन आया। लेकिन गांव के अधिकांश नवजवान पंचवक्ता नमाज़ के पाबन्द नहीं हैं, यह सारा बयान तो मेरे गांव का हुआ।

मैं एक लम्बे काल से नदवतुल उलमा में हूं, यहां से मैंने आसपास के गांवों का दौरा किया तो मुझे बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि मुझे नमाज़ियों की तादाद बहुत कम मिली। यहां मैं दो तीन साल तक हर जुमे को किसी साथी को साथ ले कर किसी गांव में जाता और वहां के लोगों को नमाज़ की ओर लाने का प्रयास करता। हमारे पाठकों को शायद यह पढ़ कर बड़ा आश्चर्य होगा कि एक गांव नगर जिसमें लगभग 35 घर मुसलमानों के हैं मगर एक जुमे की नमाज़ में केवल सात नमाज़ी थे। बहुत प्रयास किया बड़ी कोशिश की तो कुछ नमाज़ी बढ़े। माती गांव में मदरसा काइम किया, जेतीखेड़ा में, पहाड़पुर में, उगरापुर में, नगर में, हसनगंज में, इनके अतिरिक्त और कई गांवों में नदवतुल उलमा की ओर से दीनी मक्तब काइम किये गये। हां, नमाज़ी जरूर बढ़े परन्तु क्या सब मुसलमान नमाज़ पढ़ने लगे नहीं ऐसा नहीं है। तबलीग़ी जमाअ़त की कोशिशों से मुसलमानों में दीनदारी बढ़ी है, नमाज़ी भी बढ़े हैं परन्तु अभी गांवों के मुसलमानों में नमाज़ियों का प्रतिशत 40 भी नहीं हुआ। जब मैं सोचता हूं कि हश्र में हमारे बे नमाज़ी भाईयों का क्या हाल होगा तो कांप जाता हूं।

निःसंदेह मैं गुनहगार हूं परन्तु अल्लाह ने मुझे अपने गुनाहों पर लज्जित होने और क्षमा मांगने का अवसर प्रदान किया है, इसी प्रकार मेरी नमाज़ का मूल्य ही क्या है परन्तु जैसी भी हो अल्लाह ने नमाज़ पढ़ने की तौफ़ीक़ दे रखी है। जब मैं सोचता हूं कि मेरे सम्बन्ध के लोग नमाज़ न पढ़ते थे मेरे निकटी रिश्तेदार नमाज़ न पढ़ते थे जबकि वह मुझे अत्यन्त प्रिय थे तो आंसू बहने लगते हैं। मेरी खाला मुझे बहुत प्रिय रखती थीं, मैं भी उनको बहुत प्रिय रखता था परन्तु वह तो नमाज़ क्या वुज़ू करना भी नहीं जानती थीं, यह सोच कर मेरे आंसू टपकने लगते हैं, इस मौके पर मुझे हदीस के उस टुकड़े से शान्ति मिल जाती है कि ''एक दासी से अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछाः अल्लाह कहां है? तो उसने आसमान की ओर संकेत किया तो आपने कहा! यह मुसलमान है।''

मैं समझता हूं कि जो बेनमाज़ी अपने को मुसलमान कहते और समझते रहे हैं और उनका देहान्त हो चुका है इन्शा अल्लाह वह अल्लाह की कृपा से बख़्शे जायेंगे। लेकिन जो लोग जीवित हैं और अपने को मुसलमान समझते हैं मगर नमाज़ नहीं पढ़ते हैं उनका क्या हश्र होगा

शेष पृष्ठ....14 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) – अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

तौहीद की दावत और उसके तक़ाज़े (आवश्यकताएं):–

नबियों और उनके उत्तराधिकारियों का असल काम यह है कि वह अल्लाह से बन्दों का निकटस्थ सम्बन्ध पैदा करें।

अनुवादः *''और उनको इसके अलावा कोई आदेश नहीं दिया गया था, कि केवल अल्लाह ही की इबादत करें, अपने धर्म को उसके लिए शुद्ध करके एकाग्र हो कर।*

(सूरः अल् बयियनहः–25)

अल्लाह और उसके बन्दों के बीच कोई पर्दा और रोक न रहे। प्रेम व महब्बत, लगन व लगाव, इरादा व अमल, कोशिश व प्रयास हाजिरी व तौबा, आज्ञापालन व इबादत, विनती व गिड़गिड़ाना, सरगोशी व मुनाज़ात (ईश प्राथ्रना) भय और लोभ अतः मन–मस्तिष्क सबका किबलः (केन्द्र) वही हो। नबियों और उनके सच्चे उत्तराधिकारियों के तमाम प्रयासों का केन्द्र और सबसे बड़ा मक़सद यही होता है। इसी लिए उनका संघर्ष है, उनकी हिजरत (प्रवास) है, उनकी तब्लीग़ (धर्म प्रचार) है, और इसी राह में उनकी ज़िन्दगी और मौत है।

अनुवादः *''कह दीजिए निः संदेह मेरी नमाज़ और मेरी कुर्बानी और मेरा जीना और मरना सब अल्लाह के लिए है, जो सारे संसार का रब (पालनहार) है। जिसका कोई साझीदार नहीं है। मुझे तो इसी का आदेश मिला है और मैं सबसे पहले अज्ञाकारी हूं।*

(सूरः अल् अंआम–163)

और इस मक़सद में भी अल्लाह के आदेश से वह अपने क्षेत्र और अनुयायियों में पूरे तौर पर कामयाब होते हैं। वह मन मस्तिष्क को गैर अल्लाह की व्यस्तता और जकड़न से आज़ाद कर देते हैं। लेकिन अज्ञान का प्रभाव कभी–कभी इसके खिलाफ बगावत करते रहते हैं, और शिर्क इन्सानों में दब–दब कर उभरता रहता है, यहां तक कि खुद उनके नाम लेने वालों और उनकी उम्मत और अनुयायी कहलाने वालों का हाल वह हो जाता है जो कुर्आन ने बयान किया है।

अनुवादः *''उनमें अधिकतर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वे साझीदार भी ठहराते हैं।*

(सूरः यूसुफ–106)

धीरे धीरे अल्लाह से असम्बंध और गैरुल्लाह से सम्बन्ध इतना बढ़ जाता है कि व्यवहारिक रूप से वह दशा हो जाती है जो कुर्आन ने बयान की है।

अनुवादः *''और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह के बराबर बना लेते हैं, उनसे ऐसी महब्बत करते हैं जैसे अल्लाह से। (सूरः अलबकरः–165)*

अनुवादः *''और जब केवल एक अल्लाह का जिक्र किया जाता है तो जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, उनके दिल कुढ़ने*

लगते हैं, और जब इसके सिवा दूसरों का जिक्र होता है तो वे खुश हो जाते हैं।

(सूरः अल जुमर–45)

फिर इस अक़ीदे के अंतर्गत गैरुल्लाह के नाम पर वह सारे काम किए जाते हैं जो अल्लाह के लिए खास हैं। जैसे बलि (ज़बह) मन्नत, सजदा, दुआ आदि। गैरुल्लाह से ऐसी रुचि होती है कि धीरे–धीरे ज़िन्दगी का रिशता अल्लाह से टूट कर गैरुल्लाह से बंध जाता है। दिल की दिशा बदल जाती है। नबियों के आने का उद्देश्य समाप्त हो जाता है और इस्लाम पर जाहिलियत की जीत होती है। हर जमाने के दीन के नवीनीकरण करने वालों, सुधारकों तथा उलमा–ए–हक़ (सच्चे इस्लामी विद्वानों) ने वस्तु स्थिति के विरुद्ध जिहाद किया। उलमा–ए–हक नबियों के वारिस और उत्तराधिकारी हैं, उनकी विरासत और उत्तराधिकार उसी वक्त सही और मुकम्मल होगा जब उनकी जिन्दगी का मकसद और उनके प्रयासों का केन्द्र वही होगा जो नबियों का था। वह जिन्दगी का मकसद और वह प्रयासों का केन्द्र क्या है? दो शब्दों में ''धर्म स्थापना'' (इकामते दीन) या एक शब्द में ''तौहीद''। अर्थात इन्सानों को इख़्तियार से और अमल से इस तरह से अल्लाह का ''बन्दा'' बनाना जैसा कि वह स्वाभाविक व मजबूर हो कर उसके बन्दे हैं। अल्लाह की शरीयत को इन्सानों के जिस्मों और उनकी सम्बन्धित ज़मीन में लागू करने की कोशिश करना जैसा कि वह ज़मीन व आसमान पर क़ायम है।

अनुवादः *''और हमने आप से पहले कोई ऐसा रसूल नहीं भेजा कि जिसके पास हमने ''वही'' न भेजी हो कि मेरे सिवा कोई मअ़बूद (पूज्य) नहीं, तो मेरी ही इबादत करो।*

(सूरः अल्अंबिया–25)

अनुवादः *''वही तो है जिस ने अपने रसूल को मार्गदर्शन और दीने हक (सत्य धर्म) दे कर भेजा, ताकि उसे और सारे दीनों पर ग़ालिब करे, चाहे मुश्रिकों को (कितना ही) नागवारा हो।*

(सूरः अस्सफ्फ़–6)

इस दीने हक (सत्य धर्म) के लिए हर ज़माने में कुछ अवरोध व अड़चनें होती हैं, जिनमें से अधिकतर को इन चार किस्मों में बांटा जा सकता हैः–

शिर्कः– अर्थात गैरुल्लाह को इलाह (पूज्य) बनाना। अल्लाह के सिवा किसी हस्ती को अप्रत्यक्ष रूप से नुकसान और नफा देने वाला बना लेना। उसको ब्रह्माण्ड की व्यवस्था में साझीदार मान लेना।

एहतियाज व इल्तेजाः– (आवश्यकता होना और शरण ढूंढना) और भय व आशा इस अकीदे के बिल्कुल स्वाभाविक व प्राकृतिक परिणाम है और दुआ व मदद चाहना और झुकना (जो इबादत की हक़ीकत है) इसके आवश्यक मज़ाहिर (प्रकट होने वाली चीज़ें) हैं।

शिर्क (बहुदेववाद) एक स्थाई धर्म तथा पूर्ण शासन है, उसका और धर्म का किसी एक शरीर या दिल व दिमाग़ पर एक साथ स्थापित होना असंभव है।

अनुवादः *''और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो औरों को अल्लाह के बराबर (समवत पूज्य) बनाते हैं,*

जैसी महब्बत अल्लाह से रखनी चाहिए वैसी महब्बत उन से रखते हैं। (सूरः अल् बकरह–165)

अनुवादः *"मुश्रिकों ने कहा अल्लाह की कसम! हम तो खुली हुई गुमराही में थे, जब हम तुम्हें (पूज्यों को) सारे संसार के रब के बराबर कर रहे थे।*

(सूरः अश्शुअरा 97–98)

इसलिए जब तक दिल से शिर्क की तमाम जड़ें और उसकी बारीक से बारीक नस भी उखाड़ न दी जाये, उस वक्त तक अल्लाह के दीन का पौधा लग नहीं सकता, क्योंकि यह पौधा किसी ऐसी जगह पर जड़ नहीं पकड़ता जिसकी मिट्टी में किसी और पेड़ की जड़ हो या बीज हो, इसकी शाखायें उसी वक्त आसमान से बातें करती हैं और यह पेड़ तभी फलता–फूलता है जब इसकी जड़ गहरी और मज़बूत हो।

अनुवादः *"क्या आपने नहीं देखा! कि अल्लाह ने कैसी मिसाल पवित्र बात (कलिम–ए– तय्यिबः) की दी? (उसकी मिसाल ऐसी है) जैसे एक अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ मजबूत और शाखाएं आसमान में फैली हुई हैं अपने रब के आदेश से वह अपना फल देता है।*

(सूरः इब्राहीम 24–25)

यह पेड़ किसी दूसरे पेड़ की छाया में बढ़ नहीं सकता। यह जहां रहेगा अकेला रहेगा, इसकी प्राकृतिक बढ़त के लिए असीम वातावरण चाहिए।

अनुवादः *"याद रखो अल्लाह ही के लिए शुद्ध आज्ञापालन है।*

(सूरः अज्जुमर–3)

अतः जो लोग अल्लाह के दीन की फितरत (प्रवृत्ति) और उसके मिजाज़ से वाक़िफ होते हैं वह इसको किसी जगह लागू करने के लिए जमीन को पूरे तौर पर साफ और हमवार करते हैं। वह शिर्क और जाहिलियत की जड़ें और रगें चुन–चुन कर निकालते हैं और उनका एक–एक बीज चुन–चुन कर फेंकते हैं और मिट्टी को बिल्कुल उलट–पलट देते हैं। चाहे उसको इस काम में कितनी ही देर लगे। और कैसा ही कष्ट उठाना पड़े और चाहे उनको इस कोशिश और उम्र भर के इस प्रयास का फल हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की तरह कुछ एक लोग से अधिक न हो, और चाहे कुछ पैगम्बरों की तरह उनकी सारी जिन्दगी की पूंजी मात्र एक व्यक्ति हो। लेकिन वह इस नतीजे पर संतुष्ट और इस कामयाबी पर खुश होते हैं और नतीजा पाने में जल्दी नहीं करते।

कुफ़्रः– **अर्थात अल्लाह के दीन और उसकी शरीयत (क़ानून) का इन्कार। इसमें वह लोग भी शामिल हैं जो अल्लाह व रसूल के आदेशों में से किसी आदेश को भी यह जान लेने के बाद कि यह अल्लाह और उसके रसूल का हुक्म है, नहीं मानते या जबान से तो इन्कार नहीं करते मगर जान–बूझ कर इसकी अवहेलना करते हैं, ऐसे लोग चाहे दूसरे आदेशों का पालन करते हों और पाबन्द हों, इस दायरे से (अर्थात कुफ़्र के दायरे से) खारिज नहीं। अल्लाह तआला यहूदियों को सम्बोधित कर के कहता हैः–**

अनुवादः *''तो क्या तुम किताब के एक भाग को तो मानते हो और दूसरे भाग को नहीं मानते। बस तुममें से जो ऐसा करे उसकी सज़ा क्या है सिवा दुन्यावी ज़िन्दगी में रुसवाई के? और क़यामत के दिन यह सख़्त अजाब में डाले जाएंगे और अल्लाह उससे बेख़बर नहीं, जो कुछ तुम करते हो।*

(सूरः अलबकरह–85)

लेकिन जो व्यक्ति झूठे खुदाओं की खुदावनदी का साफ़–साफ़ इन्कार करने के लिए तैयार नहीं होते या दूसरे शब्दों में उन्होंने उस किब्लः की ओर तो मुंह कर लिया है। लेकिन दूसरे किब्लों (ध्यान केन्द्रों) की तरफ उन से पीठ भी नहीं की जाती है। यह वास्तव में इस्लाम में दाखिल नहीं हुए। अल्लाह पर ईमान के लिए कुफ़्र बित्तागूत, (तागूत हर वह हस्ती है जिसकी खुदा के मुकाबले में पूरी ताबेदारी की जाये) ज़रूरी है, और अल्लाह ने इसको ईमान से पहले बयान किया है।

..... जारी..... ◆◇◆

कुर्आन की शिक्षा.....

अगर तुम इधर की उधर करोगे और सच्ची बात बताने से बचोगे तो अल्लाह सब जानता है तुम्हें उसकी सजा भुगतनी पड़ेगी।

8. ईमान वालों को ताक़ीद है कि वे अपने ईमान की रक्षा करें विश्वास पैदा करें ताकि कुफ़्र से नफ़रत पैदा हो जाए और जो ईमान ला कर काफ़िर हुए फिर ईमान ले आये फिर काफ़िर हो गये केवल दुन्या की लोभ में और उनका कुफ़्र बढ़ता गया तो यह लोग दूर गुमराही में जा पड़े, यह मुनाफ़िकों का उल्लेख है और यहूदियों का कि मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाए फिर बछड़ा प्राप्त कर काफिर हो गये फिर तौबा की फिर ईसा अलैहिस्सलाम का इनकार कर काफ़िर हो गए फिर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इनकार करके कुफ़्र व इनकार में पक्के हो गए।

9. मुनाफ़िकों का काम ही दीन का मज़ाक उड़ाना था, उनकी सभाएं इससे ख़ाली न होती थी, मुसलमानों को आदेश है कि ऐसी सभाओं में बैठने से बचें वरना उन्हीं में उनकी गिनती होगी।

❖❖❖

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

भारत के मुसलमान और.....

अल्लाह रहम फरमाए। हमारे जो भाई नमाज़ के पाबन्द हैं विशेषकर जो दीन की जानकारी भी रखते हों उनका कर्तव्य है कि वह अपने बेनमाज़ी भाईयों को नमाज़ी बनाने का भरसक प्रयास करें अगर उन्होंने कोताही की तो जहां उनको नमाज़ छोड़ने की सज़ा मिलेगी वहीं नमाज़ियों और दीनदारों को उन बेनमाज़ियों को नमाज़ी बनाने के प्रयास में कोताही की भी सज़ा मिलेगी, अल्लाह हम सब की मदद करे और सारे मुसलमानों को नमाज़ पढ़ने का सामर्थ्य दे, आमीन।

❖❖❖

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी —अनुवादः अतहर हुसैन

दूसरे ख़लीफा

हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ि0:–

हज़रत अबू बक्र रज़ि0 के स्वर्गवास के बाद हज़रत उमर रज़ि0 उत्तराधिकारी नियुक्त हुए। उन्होंने अपने युग में हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0 के समान ही शासन–प्रबन्ध किया। इन्हें स्वादिष्ट खाने और अच्छे वस्त्र की कोई चिन्ता न थी। रूखा–सूखा मोटा–झोटा खा कर और फटा–पुराना पहनकर जीवन व्यतीत कर देना चाहते थे। लोगों ने कई बार इच्छा प्रकट की और सहानुभूतिवश अनेक प्रकार से समझाया कि अपने शरीर की भी चिन्ता करें, परन्तु एक न सुनी और लोगों को सदैव यह कह कर निरुत्तर कर दिया करते थे कि मैं अपने पूर्व प्रिय महानुभावों (अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत सिद्दीक़ रज़ि0) के पद्चिन्हों पर ही चल कर जीवन का लक्ष्य प्राप्त करना चाहता हूं ताकि उन्हीं के समान सफलता प्राप्त हो और जब यह जीवन–यात्रा समाप्त हो तो उन्हीं के साथ निवास प्राप्त हो।

भोग विलास से विरक्तिः–

एक बार हज़रत आइशा रज़ि0 और हज़रत हफ़्सा रज़ि0 ने मिल कर हज़रत उमर रज़ि0 का ध्यान इस की ओर दिलाया और कहा कि कुछ तो इस कठोर व्यवस्था में नरमी कीजिए। खुदा ने आप को अवसर दिया है और मदीना मुनव्वरह में धन–दौलत के ढेर लग गए हैं, तो कोई वजह नहीं कि आप अब भी कठिन जीवन व्यतीत करें। आप मुसलमानों के नायक हैं, क़ैसर तथा किसरा और अन्य सम्राटों के दूत तथा प्रतिनिधि आपकी सेवा में उपस्थित होते रहते हैं। अतः उन पर प्रभाव डालने के लिए अच्छे वस्त्र की आवश्यता है। परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 पर इस बात का तनिक भी प्रभाव न पड़ा और आपने कहा, ''तुम दोनों रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की धर्मपत्नियां हो, तुम्हें भली–भांति मालूम है कि हुजूर ने कैसी कठिनाई तथा निरीहता से जीवन व्यतीत किया। खेद है कि इस पर भी तुम मुझे सुख स्मृद्धि के उपभोग की मंत्रणा दे रही हो। हे आइशा! क्या तुम्हें हुजूर की वह बात याद नहीं, जब तुम्हारे यहां केवल एक ही कपड़ा था जो कि दिन के समय बिछा लिया जाता था और रात को ओढ़ लिया जाता था। और ऐ हफ़्सा! क्या तुम्हें वह घटना याद नहीं रही जब एक बार तुम ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बिस्तर दोहरा कर दिया था और दोहराने के कारण बिस्तर कुछ नर्म पड़ गया था जिससे उस रात हुजूर को नींद तनिक गहरी आई

और प्रातः काल तक सोते रहे। यहां तक कि हज़रत बिलाल की अज़ान सुनाई दी तब आपकी आंख खुली, उस समय आप अति व्याकुल हुए और इन शब्दों में अपने मनोभाव प्रकट किए–

''ऐ हफ़्सा! तुम ने यह क्या किया। तुमने मेरा बिस्तर दोहरा कर दिया जिससे मेरी नींद का क्रम प्रातः तक रहा, मुझे इस संसार से क्या सम्बन्ध, बिस्तर को नर्म करके तुम ने मुझे अचेतना में क्यों ग्रस्त कर दिया।''

जन सम्पत्ति का एहसासः–

एक बार एक सहाबी रबीअ़ इब्न ज़ियाद ने आपका ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि आप को खुदा ने सम्मान तथा वैभव प्रदान किया है। आपको सुखी जीवन व्यतीत करने का सबसे ज़ियादा अधिकार है, लेकिन हज़रत उमर रज़ि0 ने उन की बात पसन्द न की और उत्तर दिया कि राजकोष जनता की सम्पत्ति है और उसका व्यक्तिगत उपयोग करना उचित नहीं, खुदा ने मुझे राष्ट्रीय कोष का रक्षक बनाया है, अतः उसका भक्षक बनना मुझे शोभा नहीं देता एक और सहाबी उत्बा इब्ने फ़रक़द ने आपसे प्रार्थना की कि कुछ सुखी जीवन व्यतीत करें, उन्होंने कहा कि अमीरुल मोमिनीन, अगर आप कुछ अच्छा खा–पहन लेंगे तो इससे राष्ट्र की आय में कोई कमी न हो जायेगी। लेकिन हज़रत उमर को उनकी यह बात अच्छी न लगी और खेद प्रकट करते हुए कहा कि ''तुम मुझे भोग–विलास का प्रलोभन देते हो।''

अति साधारण जीवनः–

उस समय इस्लामी राज्य का क्षेत्र बहुत बढ़ गया था और बहुत से उपजाऊ प्रदेश मुसलमानों के अधीन हो गए थे, इसलिए साधारणतया देश के निवासियों का जीवन स्तर बहुत ऊँचा हो गया था और लोग रुखी–सूखी रोटी खाना और फटे पुराने कपड़े पहनना नापसन्द करते थे, परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 नियमानुसार वैसा ही जीवन व्यतीत करते थे।

फटे पुराने कपड़ेः–

उन के शरीर पर मोटे कपड़े होते, जिनकी भी यह दशा हो जाती कि बार बार पेवन्द लगाने की नौबत आ जाती थी। उतारने के लिए मुश्किल से दूसरा कपड़ा प्राप्त होता। जब कपड़े मैले हो जाते तो बहुधा ऐसा होता कि उन्हीं को धो कर सुखाते, फिर पहन कर बाहर निकलते। हज़रत हसन रज़ि0 ने एक बार शुक्रवार को देखा कि हज़रत उमर रज़ि0 मस्जिद में भाषण दे रहे थे और उनकी लुंगी पर बारह जोड़ लगे थे, कुर्ते पर तले ऊपर जोड़ इसके अतिरिक्त थे। बहुधा आपसे भेंट करने दूसरे देशों के दूत आते। वह अपने सम्राटों की भड़कदार तथा चमकीली वेश–भूषा की कल्पना करके मुसलमानों के शासक के वैभव तथा प्रतिष्ठा के दर्शन करना चाहते थे, परन्तु खलीफ़ा को जब फटे–पुराने कपड़े पहने किसी स्थान पर भूमि के फर्श पर बैठा देखते तो दंग रह जाते। बहुत लोगों की यह इच्छा थी कि

ऐसे अवसरों पर आप कुछ अच्छे वस्त्र पहन लिया करें ताकि अन्य देशों के दूतों की दृष्टि में उनकी हेठी न हो, परन्तु हज़रत उमर रज़ि0 ने उनका यह प्रास्ताव कभी स्वीकार न किया और सदैव यही उत्तर दिया कि हमारे लिए इस्लाम का सम्मान यथेष्ट है। सीरिया देश की यात्रा के अवसर पर बड़े–बड़े तथा विख्यात सहाबियों ने प्रार्थना की कि आप अच्छे वस्त्र पहन कर और अच्छे तुर्की घोड़े पर सवार हो कर बैतुलमुक़द्दस पधारें, परन्तु आपने किसी की न सुनी और अपने मोटे–झोटे कपड़े पहने रहे। इसी अवस्था में ईसाई नायकों से मिले और संधि पर हस्ताक्षर किये। आपकी इस साधारण वेष–भूषा से वह लोग बहुत प्रभावित हुए और उनके हृदय में यह धारणा उत्पन्न हो गई कि मुसलमान धन–दौलत तथा भोग–विलास के हेतु प्रयास नहीं कर रहे हैं अपितु मानव जाति के उद्धार तथा कल्याण के लिए प्रयत्नशील हैं।

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी .....

हज़रत उमर रज़ि0 से रिवायत है कि हम को तकल्लुफ करने से मना किया गया है। (बुखारी)

हज़रत मस्रूक रज़ि0 से रिवायत है कि हम अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि0 के पास गये उन्होंने कहा ऐ लोगो! जो शख्स कुछ जानता हो वह बता दिया करे और जिस को इल्म न हो वह वल्लाहु आलम कह दिया करे। (अर्थात अल्लाह ही खूब जानता है) वास्तव में यह इल्म ही है कि जिस को ना जानता हो तो उसके जवाब में कह दे कि अल्लाह ही खूब जानता है जैसे कि अल्लाह तआला ने अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से फरमाया है। अनुवादः कह दो कि मैं तुम से इसकी मजदूरी नहीं मांगता और ना मैं तकल्लुफ करने वाला हूं।

(बुखारी–मुस्लिम)

मृतक पर रोने धोने, सीना पीटने, गिरेबान फाड़ने, बाल उखाड़ने सर मुंडाने की मुमानिअतः–

नौहा (लाश पर चिल्ला कर रोना) से मुर्दे को तकलीफ–

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ि0 से रिवायत है कि नबी करीम सल्ल0 ने फरमाया नौहा करने के सबब से मुर्दे पर अजाब होता है। (बुखारी–मुस्लिम)

अर्थात यह कि व्यक्ति ने मरते समय नौहा की मुमानियत न की हो या उसके घर में नौहे का रिवाज़ हो, बावजूद कुदरत होने के वह मना न करे। यही कारण अज़ाब का है। हज़रत अम्र बिन आस रज़ि0 सहाबी ने इंतिकाल के समय नसीहत की थी कि मुझ पर कोई नौहा न करे।

एक रिवायत में है कि जब तक नौहा किया जाता रहता है उस पर अज़ाब होता रहता है।

(बुखारी–मुस्लिम)

◆◇◆

–प्रस्तुति–
जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

अनुरोध

अगर आपको "सच्चा राही" की सेवाएं पसन्द हों तो आप से अनुरोध है कि "सच्चा राही" के नये ग्राहक बनाने का प्रयास करें, अल्लाह आपको अज्र देगा और हम आपके आभारी होंगे।

(संपादक)

–पिछले अंक से आगे

नमाज़ की हक़ीक़त व अहम्मीयत

–मौलाना मुहम्मद मंजूर नोमानी रह0

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

नमाज़ की हक़ीक़तः–

हक़ीक़ते नमाज़ को समझने के लिए सब से सहल और सही तर तरीक़ा यही है कि आप उस के तमाम अज्ज़ा व अनासिर पर गौर करें, अगर आप ऐसा करेंगे तो उसी नतीजे पर पहुंचेंगे, जिस का हकीमुल उम्मत हज़रत शाह वलीयुल्लाह रहमतुल्लाह अलैहि ने इन अल्फाज़ में अदा किया है।

हज़रत शाह साहिब का यह कलाम अरबी में है जिस का माहसल (भावार्थ) यह है "नमाज़ की हक़ीकत तीन अनासिर से मुरक्कब हैः–"

(1) अल्लाह तआ़ला की अ़ज़मत व किबरियाई का तफक्कुर व इस्तेहज़ार।

(2) चन्द ऐसी दुआएं और ऐसे अज़कार जो इस चीज़ पर दलालत करते हैं कि बन्दे की बन्दगी और उसका अमल खालिस अल्लाह के लिए है और वह अपना रुख यकसूई के साथ अल्लाह ही की तरफ कर चुका है और अपनी हाजात में सिर्फ अल्लाह ही से मदद मांगना चाहता है।

(3) चन्द ताज़ीमी अफआ़ल जैसे कियाम, रुकूअ़ सजदा वगैरह, उनमें से हर एक दूसरे की तक्मील करता है।

(हुज्जतुल्लाहुल बालिगाः 1/73)

नीज अपनी इसी किताब में एक दूसरे मौके पर नमाज़ की रूह के बारे में फरमाते हैं–

अनुवादः "अल्लाह के सामने हुजूरी और मसकनत व महब्बत आमेज़ ताज़ीम के साथ उस के जलाल व जबरूत का तसव्वुर और गहरा ध्यान बस यही नमाज़ की रूह है।"

शाह साहिब ने नमाज़ की जो मुरक्कब हक़ीक़त और उसकी जो रूह अरबी में लिखी है, वाकिआ़ यह है कि इतना इख्तियार काइम रखते हुए उनसे बेहतर और जामे अलफाज़ में इस को अदा नहीं किया जा सकता।

नमाज़ अल्लाह के साथ बन्दे का राज़ व नियाज हैः–

सहीह बुखारी वगैरह की एक हदीस में वारिद हुआ है, अनुवादः "तुम में से कोई आदमी जब नमाज़ के लिए खड़ा होता है तो गोया वह अपने परवरदिगार से मुनाजात यानी राज व नियाज़ की बातें और सरगोशी करता है"।

पस नमाज़ की रूह की एक ताबीर यह भी है कि वह बन्दे की अपने मौला से सरगोशी और राज़दाराना व नियाज़ मन्दाना अर्ज मारूज़ है।

सलात के अस्ल मअ़ना और नमाज़ की रूहः–

सलात का लफ़्ज़ जो कुर्आन व हदीस में आम तौर पर नमाज़ के लिए इस्तेमाल किया गया है, उससे भी नमाज़ की इस रूह की तरफ इशारा मिलता है, अक्सर अहले लुगत की तहक़ीक़ यह है कि वह सलात ब मअ़ना दुआ से मन्कूल है कि सलात ब

मअ्ना '' किसी चीज़ की तरफ पूरी तरह से और हमा तन मुतवज्जेह हो जाना'' और मजकू–रए–बाला हदीस में युनाजी (मुनाजात) का लफ्ज़ सलात के यह दोनों माने लिए हुए हैं।

खुला–सए–बहसः–

अल–हासिल नमाज़ की हक़ीक़त मुरक्कब तो है इन तीन चीजों से।

(1) अल्लाह की अज़मत व जलाल का तफक्कुर व इस्तेह़ज़ार।

(2) मुक़र्ररा कलिमात के जरीये अपनी अब्दीयत व उबूदीयत और अल्लाह तआ़ला की ला–शरीक मअ़बूदीयत और रुबूबीयत का इजहार।

(3) खास अन्दाज़ से क़ियाम व कुऊद और रुकूअ़ व सुजूद के जरीये अपने तज़ल्लुल व तज़र्रोअ़ और अल्लाह तआ़ला की बेइन्तिहाई अज़मत व रफअ़त का अमली मुजाहरा।

लेकिन इस सब की रूह यह है कि नमाज़ी अपने को अल्लाह तआला का अब्दे ज़लील और लाचार व मोहताज बन्दा समझते हुए हर तरह की अज़मत व किबरियाई के मालिक, उस माबूदे बरहक की इन्तिहाई महब्बत व ताजीम के जज्बे के साथ उसके हुजूर में हाज़िर हो के अपनी बन्दगी व नियाज़मन्दी का इजहार करे।

खुशूअ़ व हुजूर वाली नमाज़ ही हक़ीक़ी और जानदार नमाज़ हैः–

जब नमाज़ की हकीकत और उसकी रूह यह ठहरी तो मालूम हुआ कि हकीकी और जानदार नमाज़ सिर्फ वही है जिस में अल्लाह तआला के सामने हाजरी का शुऊर, अपने तजल्लुल का एहसास और अल्लाह की अज़मत व किबरियाई और उसके जलाल व जबरूत का इस्तेहजार हो, जिस के लिए इन्सान के जाहिर व बातिन का खुशुअ़ लाज़िम है, अगर खुदा न ख्वास्ता यह चीज़ बिल्कुल हासिल न हो और अव्वल से आखिर तक सारी नमाज़ ग़फ़लत व बे खबरी की ही कैफियत के साथ पूरी हो तो बिला शुब्हा यह नमाज़ बेरूह क़ालिब और बे जान लाश है, अगरचे आजा की जाहरी हरकत कियाम व कुऊद और रुकूअ़ व सुजूद के लिहाज़ से इस को नमाज़ कह दिया जाए लेकिन यह हरगिज हक़ीक़ी नमाज नहीं है।

खुशूअ़ से खाली नमाज़ के मुतअ़ल्लिक़ बाज़ अइम्–मए–दीन का फतवाः–

बाज अइम्–मए–दीन का खुला फतवा है कि जो नमाज़ खुशूअ़ से खाली हो वह नमाज़ ही नहीं होती। (अलअ़लीकुस्सबीह)

शरह मिशकातिल मसाबीह में बरिवायत शैख अबू तालिब मक्की हज़रत सुफ़्यान सौरी रह0 से नक्ल किया गया हैः–

'जिस की नमाज़ खुशूअ से खाली रही उस की नमाज़ फासिद है''।

''जो नमाज़ दिल की हुजूरी के बगैर ग़फलत ही में अदा की जाए उस पर सवाब की उम्मीद से ज़ियादा अज़ाब का अन्देशा है।

और तफ्सीर इब्ने कसीर में सूरः अल–माऊन की आयत–

अनुवादः ''बड़ी खराबी है उन नमाज़ वालों के लिए जो अपनी नमाज़ों से गाफिल हैं।''

की तफ्सीर में नमाज़ से ग़ाफ़िल होने की मुतअद्दिद सूरतें बयान करते हुए आखिरी दो सूरतें यह लिखी हैं–

''जो लोग अपनी नमाज़ों को अच्छी तरह अरकान व शराइत के साथ अदा करने से गफ़लत बरतते हैं, या जो लोग अपनी नमाज़ों में खुशूअ पैदा करने की फिक्र नहीं करते और जो कुछ नमाज़ में पढ़ा जाता है उसको समझने की कोशिश नहीं करते उनके लिए भी वह खराबी है जो आयत में ''वैल'' के लफ़्ज़ में बयान हुई है, ऐ अल्लाह हम को उन लोगों में से न बना।

मशहूर आरिफे उम्मत शैख मुहीयुद्दीन इब्ने अरबी रह0 ऐसे ही लोगों के मुतअल्लिक (जो बे समझे बूझे और गफ़लत व लापरवाई से नमाज़ें पढ़ते हैं) एक इस्लाही नज़्म में फरमाते हैं, अनुवादः ''बहुत से ऐसे नमाज़ी हैं कि मस्जिद की मेहराब (और दर व दीवार) देखने और ख्वाह मख्वाह की तक्लीफ व मशक्कत उठाने के सिवा उन की नमाज़ों का कोई हासिल नहीं।

नीज़ इसी के मुतअल्लिक़ एक दूसरे बुजुर्ग के चन्द शेर यह हैं,
अनुवादः ''ऐ ग़ाफ़िल तू बिला दिल लगाए ऐसी नमाज़ पढ़ता है कि इस किस्म की नमाज़ से आदमी सज़ा का मुस्तहिक़ ठहरता है।''

''अफसोस है तुझ पर तू जानता है कि किस से तू बे तवज्जुही से बातें कर रहा है और किस के सामने बे दिली से झुक रहा है''।

''तो मैं तेरी ही इबादत करता हूं'' कह कर उससे खिताब करता है और उसी हालत में बिला जरूरत तेरा दिल दूसरी तरफ मुतवज्जेह होता है''।

''और वाकिआ यह है कि अगर कोई शख्स तुझ से बात करते हुए दूसरे की तरफ देखने लगे तो मारे गुस्से और ग़ैरत के तू फट पड़े''।

''ओ बे हया और बे मुरौवत! तुझे मालिकुल मुल्क से शर्म नहीं आती कि वह तेरी इस गफ़लत और बे तवज्जुही को देखता है''।

''जो नमाज़ इस तरह अदा की गई हो, खुदा जानता है कि वह तेरी ग़फ़लत की वजह से गुनाह के दर्जे में है''।

अलगरज़ गफ़लत और बे खबरी वाली नमाज़ (जिसमें न खुशूअ हो और न इस की खबर हो कि मैं ने अपने परवरदिगार के सामने क्या क्या अर्ज किया) महज़ जाहिरी और सतही नमाज़ है हकीक़ी नमाज़ नहीं है या यूं समझ लीजिए कि बहुत नाकिस दर्जे की नमाज़ है और नमाज़ के जो फज़ाइल कुर्आन व हदीस में वारिद हुए हैं, वह हरगिज़ इस का मिस्दाक़ नहीं है।

इक़ामते सलात के मअ़नाः–

कुर्आन मजीद में जहां कहीं नमाज़ का हुक्म है, या जहां जहां नमाज़ का जिक्र मद्ह व सताइश के साथ किया गया है तो वहां इकामते सलात ही के उनवान से किया गया है।

शेष पृष्ठ....31 पर

सात चीज़ों से पहले अच्छे आमाल कर लो

—मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी

—हिन्दी लिपि हुसैन अहमद

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया सात चीजों के आने से पहले जल्द अज़ जल्द अच्छे आमाल कर लो क्या तुम (नेक आमाल करने के लिए) ऐसे फक्ऱ का इन्तिजार कर रहे हो जो भुला देने वाला हो? या तुम ऐसी मालदारी का इन्तिजार कर रहे हो जो इंसान को सरकश बना दे? या ऐसी बीमारी का इन्तिजार कर रहे हो जो तुम्हारी सेहत को खराब कर दे? या तुम सठया देने वाले बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो? या तुम उस मौत का इन्तिजार कर रहे हो जो अचानक आ जाए? क्या तुम दज्जाल का इन्तिजार कर रहे हो, दज्जाल बदतरीन चीज़ है जिस का इन्तिजार किया जाए, या फिर कियामत का इन्तिजार कर रहे हो? क़ियामत तो बड़ी आफत और तल्ख है।

तशरीहः- यह रिवायत हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से मरवी है, इस में ''मुबादरत इलल खैरात'' यानी नेक कामों की तरफ बढ़ने की जल्दी से फिक्र करने के बारे में फरमाया गया है, चुनांचे फरमाते हैं कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया सात चीजों के आने से पहले जल्द अज जल्द अच्छे आमाल कर लो जिस के बाद अच्छा अमल करने का मौका न मिलेगा, और फिर उन सात चीजों को एक दूसरे अन्दाज़ से बयान फरमाया।

क्या फक्ऱ का इन्तिजार हैः-

क्या तुम नेक आमाल करने के लिए ऐसे फक्र व फाक़े का इन्तिजार कर रहे हो जो भुला देने वाले हो? जिस का मतलब यह है कि अगर इस वक़्त तुम्हें खुशहाली हासिल है, रूपया पैसा पास है खाने पीने की तंगी नहीं है और ऐश व आराम से जिन्दगी बसर हो रही है, इन हालात में अगर तुम नेक आमाल को टाल रहे हो तो क्या तुम उस बात का इन्तिज़ार कर रहे हो कि जब मौजूदा खुशहाली दूर हो जाएगी और खुदा न करे फ़क्र व फाक़ा आ जाएगा, और उस फक्र व फाक़े के नतीजे में तुम और चीज़ों को भूल जाओगे, क्या उस वक़्त नेक आमाल करोगे? तुम्हारा ख्याल यह है कि इस खुशहाली के ज़माने में तो ऐश हैं और मज़े हैं, और फिर जब दूसरा वक़्त आएगा, उसमें नेक अमल करेंगे, तो उस के जवाब में सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि जब माली तंगी आ जाएगी तो उस वक़्त नेक आमाल से और दूर हो जाने का अन्देशा है उस वक़्त इन्सान इतना परेशान होता है कि जरूरी काम भी भूल जाता है, कब्ल इसके कि वह वक़्त आए कि तुम्हें माली परेशानी लाहिक हो, मआशी तौर पर तंगी का

सामना हो, उससे पहले पहले जो कुछ खुशहाली हासिल है उस को ग़नीमत समझ कर उस को नेक अमल में सर्फ करो। आगे फरमाया–

क्या मालदारी का इन्तिजार है?:–

या तुम ऐसी मालदारी का इन्तिज़ार कर रहे हो जो इन्सान को सरकश बना दे? यानी अगरचे इस वक़्त बहुत ज़ियादा मालदार नहीं हो और ख्याल कर रहे हो कि अभी जरा माली तंगी है या यह कि माली तंगी तो नहीं है लेकिन दिल यह चाह रहा है कि और पैसे आजाएं, और दौलत मिल जाए तब नेक आमाल करेंगे, याद रखो! अगर मालदारी ज़ियादा होगी, और पैसे बहुत ज़ियादा आ गए और दौलत के अंबार जमा हो गए तो उसके नतीजे में अन्देशा यह है कि कहीं ऐसा न हो कि वह माल व दौलत तुम्हें और ज़ियादा सरकशी में मुबतला कर दे, इस लिए कि इन्सान के पास जब माल ज़ियादा हो जाता है और ऐश व आराम ज़ियादा मुयस्सर आ जाता है तो वह खुदा को भुला बैठता है, लिहाज़ा जो कुछ करना है अभी कर लो।

क्या बीमारी का इन्तिज़ार है?

या ऐसी बीमारी का इन्तिज़ार कर रहे हो, जो तुम्हारी सेहत को खराब कर दे? यानी इस वक़्त तो सेहत है तबीअ़त ठीक है जिस्म में ताक़त और कूवत मौजूद है, अगर इस वक़्त कोई अमल करना चाहोगे तो आसानी के साथ कर सकोगे, तुम क्या नेक अमल को इसलिए टाल रहे हो कि यह सिहत रुख्सत हो जाए और खुदा न करे जब बीमारी आजाएगी, फिर नेक अमल करोगे? अरे जब सिहत की हालत में नेक अमल नहीं कर पाये तो बीमारी की हालत में क्या करोगे? और फिर बीमारी खुदा जाने कैसी आ जाए और किस वक़्त आ जाए, तो क़ब्ल इसके कि वह बीमारी आये नेक अमल कर लो।

क्या बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो:–

या तुम सठया देने वाले बुढ़ापे का इन्तिजार कर रहे हो? अभी तो हम जवान हैं, अभी तो हमारी उम्र ही क्या है, अभी दुन्या में देखा ही क्या है, इस जवानी के ज़माने को ऐश और लज्जतों के साथ गुजर जाने दो, फिर नेक अमल कर लेंगे, तो सरकारे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि क्या तुम बुढ़ापे का इन्तिज़ार कर रहे हो? हालांकि बाज़ अवक़ात बुढ़ापे में इन्सान के हवास खराब हो जाते हैं और अगर कोई काम करना भी चाहे तो नहीं कर पाता, तो क़ब्ल इस के कि बुढ़ापे का दौर आए, इससे पहले इस ज़माने में नेक अमल कर लो, बुढ़ापे में तो यह हालत होती है कि मुंह में दांत और न पेट में आंत और जब गुनाह करने की ताक़त ही न रही, उस वक़्त अगर गुनाह से बच भी गए तो क्या कमाल कर लिया? जब जवानी हो ताक़त मौजूद हो, गुनाह करने के सामान मौजूद हों, गुनाह करने के अस्बाब मौजूद हों, गुनाह करने का जज्बा दिल में मौजूद हो उस वक़्त अगर इन्सान गुनाह से बच जाए तो दरहक़ीक़त यह पैगम्बराना तरीक़ा है, चुनांचे इसी के बारे में शेख सादी फरमाते हैं कि–

वक्त पीरी गुर्गे जालिम मीशवद परहेजगार
दर जवानी तौबा करदन शेवए पैगम्बरेस्त

''अरे बुढ़ापे में तो जालिम भेड़िया भी परहेजगार बन जाता है, वह इस लिए परहेजगार नहीं बना कि उसको किसी अख्लाक़ी फलसफे ने परहेजगार बना दिया, या उसके दिल में खुदा का खौफ आ गया बल्कि इसलिए परहेजगार बन गया कि अब शिकार कर ही नहीं सकता, किसी को चीड़ फाड़ कर खा नहीं सकता, अब वह ताक़त ही बाकी नहीं रही, इस लिए एक गोशे में अन्दर परहेजगार बना बैठा है बल्कि जवानी के अन्दर तौबा करना, यह है पैगम्बरों का शेवा, यह है पैगम्बरों का शिआ़र, हज़रत यूसुफ अलै0 को देखिए कि भरपूर जवानी है, ताक़त है, कूवत है, हालात मयस्सर हैं और गुनाह की दावत दी जा रही है, लेकिन उस वक़्त जबान पर कल्मा आता है, ''मैं अल्लाह की पनाह मांगता हूं'' यह है पैगम्बरों का शेवा कि इन्सान जवानी के अन्दर गुनाह से ताइब हो जाए जवानी के अन्दर इन्सान नेक अमल करे, बुढ़ापे में तो और कोई काम बन नहीं पड़ता, हाथ पांव चलाने की सकत ही नहीं, अब गुनाह क्या करे? गुनाह के मवाके ही खत्म हो गए इस लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमाते हैं कि क्या तुम्हारा यह ख्याल है कि जब बूढ़े हो जाएंगे तब नेक अमल करेंगे, तब नमाज़ शुरुअ़ करेंगे उस वक़्त अल्लाह को याद करेंगे, अगर हज फर्ज़ हो गया तो यह सोचते हैं कि जब उम्र ज़ियादा हो जाएगी, तब हज को जाएंगे खुदा जाने कितने दिन ज़िन्दगी है, कितनी मुहलत मिली हुई है, वक़्त आता है नहीं आता, अगर बुढ़ापा आ भी गया तो मालूम नहीं उस वक़्त हालात साजगार हों न हों, लिहाजा इस वक़्त नेकियां कर गुज़रो।

क्या मौत का इन्तिज़ार है?:-

या तुम उस मौत का इन्तिज़ार कर रहे हो जो अचानक आ जाए, अभी तो तुम नेक आमाल को टाल रहे हो कि कल कर लेंगे, परसों कर लेंगे, कुछ और वक़्त गुजर जाए तो शुरुअ़ कर देंगे क्या तुम्हें यह मालूम नहीं कि मौत अचानक भी आती है। कभी कभी तो मौत पैगाम देती है अल्टी मेटम देती है, लेकिन बाज अवक़ात बगैर अल्टीमेटम के भी आ जाती है, और आज की दुन्या में तो हादिसात का यह आलम है कि कुछ मालूम नहीं किस वक़्त इन्सान के साथ क्या हो जाए वैसे तो अल्लाह तआ़ला नोटिस भेजते हैं।

मलकुल मौत से मुलाक़ातः-

एक हिकायत लिखी है कि एक शख्स की एक मरतबा मलकुल मौत से मुलाक़ात हो गई (खुदा मालूम कैसी हिकायत है लेकिन बहर हाल इबरत की हिकायत है), तो उसने इज़राईल अलै0 से कहा कि जनाब! आप का भी अजीब मुआमला है, जब आप की मरजी होती है, आ धमकते हैं, दुन्या का काइदा तो यह है कि अगर किसी को कोई

सज़ा देनी हो तो पहले उसको नोटिस दिया जाता है कि फुलां वक्त में तुम्हारे साथ यह मुआमला होने वाला है, उसके लिए तैयार हो जाना आप तो नोटिस के बगैर चले आते हैं? इज़राइल अलै0 ने जवाब दियाः अरे भाई! मैं तो इतने नोटिस भेजता हूं कि दुन्या में कोई भी नहीं देता होगा, मगर उसका क्या इलाज कि कोई नोटिस सुनता ही नहीं? तुम्हें मालूम नहीं कि जब बुखार आता है, वह मेरा नोटिस होता है, जब सर में दर्द होता है, वह मेरा नोटिस होता है, जब बुढ़ापा आता है वह मेरा नोटिस होता है, जब सफेद बाल आ जाते हैं वह मेरा नोटिस होता है जब आदमी के पोते पैदा हो जाते हैं वह मेरा नोटिस होता है, मैं तो मुसलसल नोटिस भेजता हूं, यह और बात है कि तुम सुनते ही नहीं, यह सारी बीमारीयां अल्लाह तआला की तरफ से नोटिस हैं कि देखो! वक़्त आने वाला है।

कुर्आने करीम में अल्लाह तआला फरमाते हैं– अनुवादः ''यानी आखिरत में हम तुम से पूछेंगे क्या हम ने तुम को इतनी उम्र नहीं दी थी जिसमें अगर कोई नसीहत हासिल करना चाहता तो नसीहत हासिल कर लेता, और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया था।

(सूरः फातिर–37)

हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे हैं कि क्या तुम ऐसी मौत का इन्तिज़ार कर रहे हो जो नोटिस दिए बगैर अचानक आ जाए, क्या मालूम कि कितनी सांसें अभी बाक़ी हैं, इसका इन्तिज़ार क्यों कर रहे हो? इसके बाद फरमाया–

क्या दज्जाल का इन्तिज़ार है?:–

क्या तुम दज्जाल का इन्तिजार कर रहे हो? और यह सोच रहे हो कि अभी तो ज़माना नेक अमल के लिए साज़गार नहीं है तो क्या दज्जाल का ज़माना साज़गार होगा? जब दज्जाल जाहिर होगा तो क्या इस फितने के आलम में नेक अमल कर सकोगे? खुदा जाने उस वक़्त क्या आलम हो, गुमराही के कैसे मुहर्रकात और तकाजे पैदा हो जाएं, तो क्या तुम उस वक़्त का इन्तिज़ार कर रहे हो? यानी दज्जाल बदतरीन चीज़ है जिस का इन्तिज़ार किया जाए, बल्कि उसके आने से पहले पहले नेक अमल कर लो, और आखिर में फरमाया–

क्या क़ियामत का इन्तिज़ार है?:–

या फिर कियामत का इन्तिज़ार कर रहे हो? तो सुन लो कि क़ियामत जब आएगी तो इतनी मुसीबत की चीज़ होगी कि उस मुसीबत का कोई इलाज इन्सान के पास नहीं होगा तो उस के आने से पहले नेक अमल कर लो।

पूरी हदीस का खुलासा यह है कि किसी नेक अमल को टालो नहीं, और आज के नेक अमल को कल पर मत छोड़ो, बल्कि जब नेक अमल का जज्बा पैदा हो, उस पर फौरन अभी अमल कर लो, अल्लाह तआला मुझे और आप सब को उस पर अमल करने की तौफीक़ अता फरमाए।

आमीन!

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर?

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः हरम की मस्जिद में हज के दौरान आम तौर से यह सूरते हाल होती है कि बाज दफा मर्दों की सफों में औरतें शामिल हो जाती हैं, ऐसी सूरत में मर्दों की नमाज़ होती है या नहीं? अगर नहीं होती है तो मर्दों को क्या करना चाहिए?

उत्तरः जमाअत की नमाज़ में औरतों के लिए मर्दों की सफों में खड़ा होना दुरुस्त नहीं है, क्यों कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जमाअ़त की नमाज़ में औरतों को मर्दों के पीछे खड़ा होने का हुक्म फरमाया है, लिहाजा औरत अगर शुरुअ़ से जमाअत की नमाज़ में शामिल हो और इमाम ने औरतों की भी नीयत की हो, तो जो मर्द उस से मुत्तसिल दाएं या बाएं हो या ठीक उसके बिलमुकाबिल पीछे सफ में हो, उसकी नमाज़ फासिद हो जाएगी, और उसे अपनी नमाज़ दोहरानी होगी। (तबयीनुल ह़काइक़)

लेकिन अगर जमाअत की नमाज़ शुरुअ़ होने के बाद कोई औरत आए और मर्द के बराबर खड़ी हो जाए तो जिस मर्द के बाजू में खड़ी हुई, उसने इशारे से पीछे चले जाने को कहा, लेकिन वह पीछे नहीं गई और उसी सफ में नमाज़ पढ़ने लगी तो मर्द की नमाज़ फासिद नहीं होगी, अल्बत्ता औरत की नमाज़ फासिद हो जाएगी। उलमाए अहनाफ की यही राय है।

(अल–बह़रुर्राइकः1/620)

मालकिया, शवाफे और हनाबिला के नज़दीक अगरचे औरत का मर्द की सफ में आ जाना दुरुस्त नहीं है, लेकिन नमाज़ न मर्दों की फासिद होगी और न औरतों की। (अलफिक्हुल इस्लामी व अदिल्लतुहूः 2/1261)

प्रश्नः जुमे के दिन हरमे मक्की में इतनी जियादा भीड़ हो जाती है कि बहुत से नमाज़ी मस्जिदे हराम और उसके आंगन से दूर रास्तों, बाजारों और खाली जगहों में नमाज़ जुमा अदा करते हैं, सुवाल यह है कि सिहने मस्जिदे हराम के नमाजियों और बाहर रास्तों वगैरा पर नमाज़ पढ़ने वालों के दर्मियान बिल्डिंग, मार्केट और मुखतलिफ काम की जगहें हाइल होती हैं, तो क्या उन की इक्तिदा दुरुस्त होगी और जमाअत में शिरकत मानी जाएगी या नहीं?

उत्तरः मस्जिदे हराम और उसके सिहन में जगह न हो और लोग सिहन के करीब सफ बन्दी करते जाएं और दूर तक रास्तों वगैरा में भी सफ बना लें, हालांकि दर्मियान में इमारतें और दीगर जरूरियात की जगहें हाइल हैं, तब भी यह इक्तिदा दुरुस्त होगी और जमाअ़त में शिर्कत तसव्वुर की जाएगी, अलबत्ता यहां यह लिहाज जरूरी है कि मुक्तदी को इमाम का हाल मालूम हो, चाहे इमाम या मुकब्बिर की आवाज़ सुन कर या देख कर हो।

(अलफिक्हुल इस्लामी व अदिल्लतुहूः 2/1248)

प्रश्नः इमाम अगर रुकुअ़ में हो और मुक्तदियों की आमद का उसे एहसास हो जाए और इस इरादे से रुकुअ़ तवील कर दे कि कुछ और लोग रकअ़त पा लें तो क्या ऐसा करना दुरुस्त है? यह सुवाल इसलिए है कि अइम्–मए–मसाजिद को इस की नौबत पेश आती रहती है?

उत्तरः हदीस में यह बात आयी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाज औक़ात बच्चों के रोने की आवाज़ सुन कर नमाज़ मुख्तसर कर दिया करते थे, क्यों कि उन की माएं नमाज़ में शरीक रहती थीं, इससे मालूम हुआ कि जमाअत की नमाज़ में शरीक होने वाले नमाज़ियों की रिआयत शरीअ़त के खिलाफ नहीं, फुक़हा ने लिखा है कि किसी मुतअय्यन शख्स के आने का एहसास करते हुए नमाज़ को तवील (लम्बी) करना मकरूह है, क्यों कि उसमें खयाल होता है कि उस की प्रतिष्ठा से मुतअस्सिर (प्रभावित) हो कर नमाज़ तवील की गई है, हालांकि नमाज़ है ही इस लिए कि इन्सान अल्लाह तआला की बड़ाई किबरियाई के सिवा सारी बड़ाईयों को दिल से निकाल दे, हां अगर किसी मुतअय्यन शख्स की रिआयत में नमाज़ को लम्बी न करे बल्कि पहचाने बगैर आने वालों की रिआयत में रुकूअ़ को एक दो तस्बीह के बकद्र लम्बा कर दें तो यह दुरुस्त है, मगर इतनी ही मिक़्दार में रुकूअ़ को तवील कर सकता है, इससे जियादा नहीं, ताकि दूसरे नमाज़ियों के लिए गिरानी का बाइस न हो।

(किताबुत्तजनीस वल–मजीद लि–साहिबिल हिदायाः 2/16)

प्रश्नः बच्चे मस्जिद में नमाज़ किस तरह पढ़ें, बड़े हज़रात बच्चों को आगे नमाज़ पढ़ने नहीं देते, और बच्चे पिछली सफ में खड़े हो कर काफी शोर मचाते हैं इससे दूसरों की नमाज़ मुतअस्सिर होती है?

उत्तरः हजरत अबू मालिक अशअ़री रज़ि0 ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरी–क़ए–नमाज़ बताते हुए पहले मर्दों, उसके बाद बच्चों की सफें लगवाईं फिर नमाज़ पढ़ाई, अस्ल उसूल तो यही है और यह उन बच्चों के लिए है जो नाबालिग हों लेकिन बाशऊर हों तो उन्हें बड़ों की सफों में खड़ा करना चाहिए लेकिन अगर बच्चे बेशऊर और छोटे हों तो उन्हें पीछे सफों में खड़ा करना चाहिए ताकि शोर न हो और दूसरे लोगों की नमाज़ें मुतअस्सिर न हों, अल्लामा राफई रह0 ने अल्लामा रहमती रह0 की यही राय नक्ल की है और हमारे ज़माने में इस को बेहतर करार दिया है।

(तक़रीराते राफई अ़लशामीः 2/73)

प्रश्नः आज कल पानी की बोतलें बाज़ारों, दुकानों, रेलवे स्टेशनों, हवाई अड्डों और मुख्तलिफ मुकामात पर कीमतन मिलती है, क्या पानी की तिजारत जाइज़ है? जब कि मालूम है कि पानी खुदा की मिल्क है और तमाम इन्सानों के लिए कहीं से भी हासिल करना मुबाह है, इस सिलसिले में इस्लामी शरअ़ का क्या हुक्म है?

उत्तरः जो पानी बरतनों में महफूज़ कर लिया जाए,

इन्सान उस का मालिक हो जाता है और उस की खरीद व फरोख्त में कोई हरज नहीं, अल्बत्ता ज़ाती तालाब, जाती कुँएं के जाइद अज़ ज़रूरत पानी को बेचना और उस से इस्तिफादा करने वालों से उस की क़ीमत वसूल करना बेहतर नहीं है। (रद्दुलमुहतारः 7/189)

लेकिन जो तालाब आम लोगों के लिए बनवाये जाते हैं या आज कल जो तालाब सरकारी मिलकीयत के हैं उन से पानी रोकना जाइज़ नहीं इसी तरह जो कुँएं आम लोगों के लिए होते हैं उन से भी पानी लेने में रोकना दुरुस्त नहीं।

प्रश्नः आज कल बाज़ लोग चीज़ें किस्तों पर जियादा कीमत पर खरीदते हैं मसलन सौ रूपये की चीज़ एक सौ दस रूपये में खरीद कर रोजाना पांच रूपये अदा करते हैं, क्या यह सूरत सूद में दाखिल है?

उत्तरः नक़्द और उधार की कीमत में फर्क करना जाइज़ है, अल्बत्ता एक ही कीमत फरीकैन के दरमियान मुतअ़य्यन हो जानी चाहिए। (बदाए व सनाएः 5/187)

इस सूरत में चूंकि पैसा सामान के मुकाबला में है न कि पैसे के मुकाबले में, इस लिए यह सूद की सूरत नहीं है, यह बात भी दुरुस्त है कि एक क़ीमत तै करके उसे हस्ब मुआहदा रोजाना की किस्तों में अदा किया जाए, फुकहा ने इस सूरत को सराहतन जाइज़ करार दिया है।

(मन्हतुल खालिक़ अललबहरः 5/280)

प्रश्नः आज कल सरमाया–कारी का एक तरीक़ा यह भी राइज हो गया है कि कुछ मुतअय्यन रक़म मसलन एक लाख रूपया किसी दूसरे को तिजारत और कारोबार के लिए दे देते हैं और फिर उस से हर माह नफा के तौर पर कुछ मुतअय्यन रकम मसलन एक हज़ार रूपये हासिल करते हैं, और उसे मुज़ारबत समझते हैं (जो शरअन जाइज़ है) सुवाल यह है कि क्या सरमायाकारी का यह तरीक़ा इस्लामी शरअ़ में जाइज़ है?

उत्तरः सरमायाकारी का यह तरीक़ा जिस में नफा की एक मिक्दार मुतअय्यन कर दी जाए, जाइज़ नहीं है इस्लामी शरअ में नफा की मिक़्दार मुतअय्यन करना दुरुस्त नहीं है, क्योंकि यह सूद के हुक्म में आ जाता है, और उस को मुजारबत करार देना भी दुरुस्त नहीं है क्योंकि मुजारबत दुरुस्त होने के लिए शर्त यह है कि नफा या नुक्सान फरीकैन के दरमियान गैर मुअय्यन और फीसद में तै हो, सरमायाकारी की मज़कूरा सूरत मुज़ारबत या मुशारकत के खिलाफ है और सूद के जुमरे में आती है, इसलिए जाइज़ नहीं है।

(हिदायाः 4/258)

प्रश्नः एक शख्स कारोबार में किसी के माल की बिकरी करता है, और उस की रकम में से कुछ फीसद अपने पास रख कर बाक़ी रकम उस को दे देता है, तो क्या यह जाइज़ है?

उत्तरः इस सूरत का जाइज़ होना बाहमी मुआहदे पर मौकूफ है, अगर फरोख्त करने वाला उसका मुलाज़िम है और उस के इल्म में लाये बगैर कुछ फीसद रक़म छुपा

शेष पृष्ठ...31 पर

दुन्या की वास्तविकता और मानवी चाहतें

–मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

–हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

पवित्र कुर्आन में दुन्या की वास्तविकता कुछ इस प्रकार वर्णित हुई है–

अनुवादः ''सांसारिक जीवन की उपमा तो बस ऐसी है जैसे हम ने आकाश से पानी बरसाया, तो उसके कारण धरती से उगने वाली चीजें, जिन को मनुष्य और चौपाये सभी खाते हैं वह घनी हो गईं, यहां तक कि जब धरती ने अपना श्रृंगार कर लिया और संवर गई और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उस पर पूरा अधिकार प्राप्त है कि रात या दिन में हमारा आदेश आ पहुंचा। फिर हम ने उसे कटी फसल की तरह कर दिया, मानो कल यहां कोई आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए खोल–खोल कर निशानियां बयान करते हैं, जो सोच–विचार से काम लेना चाहें।'' (सूरः यूनुस–24)

दूसरी जगह आया है–

अनुवादः ''जान लो, सांसारिक जीवन तो बस एक खेल और तमाशा है और एक साज–सज्जा और तुम्हारा आपस में एक–दूसरे पर बड़ाई जताना, और धन और संतान में परस्पर एक–दूसरे से बढ़ा हुआ प्रदर्शित करना। वर्षा की मिसाल की तरह जिसकी वनस्पति ने किसान का दिल मोह लिया। फिर वह पक जाती है, फिर तुम उसे देखते हो कि वह पीली हो गई। फिर वह चूर्ण–विचूर्ण हो कर रह जाती है, जब कि आखिरत में पापियों के लिए कठोर यातना भी है और नेकों के लिए अल्लाह की क्षमा और प्रसन्नता भी। सांसारिक जीवन तो केवल धोखे की सुख–सामग्री है।''

(अल–हदीद–20)

एक और जगह इस प्रकार आया है, अनुवादः ''यह सांसारिक जीवन तो बस अस्थायी उपभोग है। निश्चय ही स्थायी रूप से ठहरने का घर तो आख़िरत है।'' (अल–मोमिनः39)

एक और जगह इस तरह आया है, अनुवादः ''और यह सांसारिक जीवन तो केवल दिल का बहलावा और खेल है। निस्संदेह पश्चात्वर्ती घर (आखिरत का घर) ही वास्तविक जीवन है। क्या ही अच्छा होता कि वे जानते।''

(अल–अनकबूतः64)

यह है वास्तविकता इस जीवन की जिस के विषय में हम यह तक नहीं जानते कि वह कहां बीतेगी कैसे गुजरेगी, कब तक रहेगी, कितना हंसाएगी, कितना रुलाएगी, कितना दुख देगी, कितना सुख देगी, समाप्त होगी तो कब समाप्त होगी, और कहां समाप्त होगी, इस का अन्त मित्रों के संग कहकहा लगाते हुए होगा या बिस्तर पर सोते हुए, बाज़ार में सामान खरीदते हुए होगा या हास्पिटल में कराहते हुए।

हम अपनी इच्छाओं में कुछ इस प्रकार डूब जाते हैं कि हम को यह भी ध्यान नहीं रहता कि हम शुद्ध कर रहे हैं या अशुद्ध, हम गलत करते हैं, जानते बूझते करते हैं, अपने मन को संतुष्ट नहीं कर पाते परन्तु दूसरों को संतुष्ट करने के लिए अशुद्ध अर्थों का सहारा लेते हैं।

जीवन तथा मृत्यु का विष अनोखा है दोनों एक दूसरे के विपरीत परन्तु दोनों एक दूसरे के लिए अनिवार्य, जीवन होगा तो मृत्यु आएगी मृत्यु को आना है तो जीवन मिलेगा जब यह सिद्ध है तो मृत्यु से इतनी अचेतना क्यों और केवल जीवन पर सारा ध्यान क्यों? बुद्धिमान है वह व्यक्ति जिसको जीवन मिला तो उसने मौत को याद रखा और जिसने मृत्यु को याद रखा वही अपने जीवन में सफल रहा। हदीस में आया है, अनुवादः ''बुद्धिमान मनुष्य वह है जिसने अपनी चाहतों पर अधिकार पा लिया और मृत्यु के पश्चात के जीवन के लिए परिश्रम किया और मूर्ख वह है जो अपनी चाहतों के पीछे चला और मन की चाहतों की चिन्ता में रहा और अल्लाह से अपनी चाहतों की पूर्ति चाहता रहा। (तिर्मिज़ी)

मनुष्य को यदि मृत्यु पर अधिकार दिया जाए तो कदाचित ही कोई मरने को तैयार हो, मनुष्य शय्या पर है, पीड़ा से तड़प रहा है, शरीर का जोड़ जोड़ दुख रहा है, कराहते कराहते व्याकुल हो रहा है परन्तु मौत का फरिश्ता उससे पूछे कि क्या संसार से प्रस्थान करने की इच्छा है तो वह यही कहेगा, नहीं। हरगिज नहीं।

मनुष्य बचपन बिताता है खेल कूद में, जवानी कमाने खाने में, बुढ़ापा घर ताकने में, पैसों की हवस है कि कम नहीं होती, घर बनाता है तो बे घर लोगों को सोचता भी नहीं, घर क्या बनाता है, महल बनाता है, गरीबों के झोपड़े उजाड़ कर और उनकी ज़मीन अवैध ढंग से दबा कर। वह बारात लेकर निकलता है तो पैसों को धुएं की शक्ल में उड़ाता हुआ, दूसरे की भावनाओं को अपने अहंकार के हाथी से कुचलता हुआ, रास्ते में कितने ऐसे घर पड़ते हैं जहां युवतियां अपनी बारात की प्रतीक्षा में बैठी हैं, उनके बूढ़े माँ–बाप धूम धाम से निकलती बारातों के इस शोर गुल में अपनी बेटियों के मुखड़ों पर निराशा की छाया देख कर धीरे धीरे अपने पग समाधिस्थल की ओर बढ़ा देते हैं

बारात द्वारा अपना वैभव दिखाने वाला और दहेज की भीख मांग कर अपना महल भरने वाला कभी यह नहीं सोचता कि इस अवसर पर किसी की बेटी की आंख से टपके हुए आंसू की एक बूंद और उसके बूढ़े मां–बाप के दिल से निकली एक कराह उस की बारात को कहां से कहां कहां पहुंचा सकती है।

हज़रत हसन बसरी रह0 का कथन है कि ''मुझे उस व्यक्ति से अधिक किसी पर आश्चर्य नहीं होता जो संसार से प्रेम को महा पाप नहीं समझता, सांसारिक प्रेम महा पाप है, इसलिए कि वह

सैकड़ों नहीं हजारों पापों का रास्ता दिखाता है और सिर्फ दिखाता ही नहीं, अपितु उस रास्ते पर चलाता है और चलाता ही नहीं दौड़ाता है।

मनुष्य को केवल अपनी इच्छाओं की चिन्ता होती है, सांसारिक स्वाद ही उसके समक्ष होते हैं, उस का मन हर समय यही चाहता है कि क्या अच्छा हो कि मौत टल जाए और मौत से छुटकारा मिल जाए, अल्लाह तआला ने यह जीवन एक निश्चित समय तक के लिए दिया है और यह बुद्धि के अनुकूल है इसलिए कि यदि यह मौत न होती तो मनुष्य इस संसार में फिरऔन बन जाता, यह मौत ही मानव को मानव बनाती है और इस संसार में यही मौत है जो हर एक को आती है किसी को छोड़ती नहीं है उसको किसी से मित्रता नहीं उस का किसी से नाता नहीं कोई उसको रोक नहीं सकता यह अपना रास्ता स्वयं बनाती है अपनी विधि स्वयं चुनती है। अगर ऐसा ना होता तो फिरऔन को मौत न आती, हामान न मरता, शद्दाद अपनी जन्नत से आनन्द लेता रहता, यह मौत सब को आती है परन्तु किसी की मौत सम्मान से होती है तो किसी की अपमान से।

देखिए पवित्र कुर्आन मौत को किस प्रकार वर्णित करता है, अनुवादः ''तुम जहां भी रहो मौत से छुटकारा नहीं, चाहे सुदृढ़ दुर्ग में हो।''

(अन–निसाः 78)

दूसरी जगह आया है,

अनुवादः अल्लाह ने अपने नबी से कहा ''कह दो मृत्यु जिस से तुम भागते हो, वह तो तुम्हें मिल कर रहेगी फिर तुम उसकी ओर लौटाए जाओगे जो छिपे और खुले का जानने वाला है। और वह तुम्हें उस से अवगत करा देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।'' (अल–जुमुआः 8)

जीवन कैसे बिताया जाए और संसार में कैसे रहा जाए, इच्छाओं को वश में कैसे किया जाए, मचलते मन को कैसे मनाया जाए, देखिए अल्लाह के नबी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कितनी अच्छी बात और कितने संक्षेप में कही है।

अनुवादः ''हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे मोढे को पकड़ा और कहा संसार में इस प्रकार रहो जैसे प्रदेशी रहता है या पथिक।'' (बुखारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर का कथन है कि जब तुम सांझ करो तो प्रातः की प्रतीक्षा मत करो और जब प्रातः करो तो सांझ की प्रतीक्षा में न रहो।

हज़रत ईसा अलैहि–स्सलाम ने अपने हवारियों को निर्देश दिया कि यह संसार एक भारी भवन है इससे सीख प्राप्त करो उस के संवारने में मत लगो।

हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से पूछा गया ''ऐ सब से लम्बी आयु पाने वाले! आपने दुन्या को कैसा पाया? उत्तर दिया एक घर के प्रकार जिस में दो द्वार हैं उनमें पहले से मैंने प्रवेश किया और दूसरे से बाहर निकल गया।

हज़रत अली रज़ि0 का कथन है दुन्या पीछे की तरफ हटी और आखिरत आगे की तरफ बढ़ी (अर्थात दुन्या जा रही है और आखिरत आ रही है) और इन दोनों के पास कुछ लोग हैं तो तुम आखिरत (अगले जीवन) वाले बनों और दुन्या वाले न बनो (अर्थात आखिरत को भूल कर दुन्या में लीन न हो जाओ) आज कर्म (अमल) है हिसाब नहीं और कल हिसाब (लेखा जोखा) होगा अमल नहीं होगा। ◆◇◆

आपके प्रश्नों के उत्तर.....

लेता है तो यह नाजाइज़ और खियानत है, अगर साहिबे माल से उस का यही मुआहदा है कि वह जितना माल फरोख्त करेगा, उस पर इतने फीसद बतौरे उजरत मिलेगा तो उस के लिए गुंजाइश है, क्योंकि अगरचे इस सूरत में उजरत एक हद तक गैर मुतअय्यन होती है लेकिन उस की वजह से निज़ाअ़ पैदा नहीं होती और यह तरीक़ा आज कल मुतआ़रिफ और मुरव्वज हो चुका है। ◆◇◆

नमाज़ की हक़ीक़त व ..... मसलन– अक़ीमुससलात, अक़ामुस्सलात, युकीमूनस्सलात, मुकीमीनस्सलात और इकामतुस्सलात (नमाज़ काइम करना) के माना हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास की तशरीह के मुताबिक यह हैं कि:

''नमाज़ में रुकूअ़ व सुजूद अच्छी तरह से किया जाए, कुर्आन मजीद की तिलावत का भी हक़ अदा किया जाए और पूरी तरह मुतवज्जेह हो कर खुशूअ़ के साथ नमाज़ पढी जाए''।

जाहिर है कि इक़ामते सलात का यह मुतालबा हमारी उन बेरूह नमाज़ों से क्यों कर अदा हो सकता है जो शऊर व हुजूर की कैफीयत से खाली हों और अव्वल से आखिर तक गफ़लत व बे खबरी की सिफत के साथ पढ़ी जाती हों।

नीज़ कुर्आन मजीद ही में उसी नमाज़ को फलाह का जरीआ़ बतलाया गया है जो खुशूअ़ की सिफत के साथ अदा की गई हो।

''कामयाब व बा मुराद हैं वह ईमान वाले जो अपनी नमाज़ें खुशूअ के साथ अदा करते हैं।''

(अल–मोमिनून–1)

और इसी की तफ़्सीर और शरह समझना चाहिए, उस हदीस को जो हज़रत उबादा बिन सामित रज़ि0 ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत की है–

''पांच नमाज़ें अल्लाह तआला ने फर्ज़ की हैं जिस ने अच्छी तरह इनके लिए वुजू किया और ठीक वक्त पर इनको पढ़ा और रुकूअ़ व सुजूद भी जैसे करना चाहिए वैसे ही किया, और खुशूअ की सिफत के साथ इनको अदा किया तो ऐसे शख्स के लिए अल्लाह तआला का वादा है कि वह उसको बख्श देगा, और जिसने ऐसा न किया (यानी इन शराइत के साथ नमाज़ को अदा न किया) तो उसके लिए अल्लाह का कोई वादा नहीं, चाहेगा तो उस को बख्श देगा और चाहेगा तो उसको सज़ा देगा।
(मुसनद अहमद, अबूदाऊद नसई)

बहर हाल अल्लाह तआ़ला के यहां कद्र व क़ीमत सिर्फ खुशूअ़ व हुजूर वाली नमाज़ ही की है।

जारी.....

❖❖❖

क्या हम नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सच्चे पैरो हैं?

—मौलाना जाफर मसऊद नदवी— —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह मतलूब सिद्दीक़ी

रबीउल अव्वल के मुबारक मौक़े पर मीलादुन्नबी की महफिलें सजती हैं, खुतबा और वाइज़ीन की जोशो वलवला अंगेज़ तक़रीरें होती हैं, नअ़तिया मुशायरों का एहतिमाम होता है और पूरी रात यह सिलसिला जारी रह कर सुब्ह की अज़ान पर इख्तिताम को पहुंचता है लेकिन पूरी रात जाग कर जब लोग अपने घरों को लौटते हैं तो वह यह नही बता सकते कि हुजूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की घरेलू ज़िन्दगी और समाजी जिन्दगी कैसी थी वह मेअ़राज का वाक़िया बयान कर सकते हैं, ग़ज़—वए—उहुद की तफसीलात आप के सामने रख सकते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मोजिज़ात पर रोशनी डाल सकते हैं, ग़ारे हिरा में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इबादत की मंजर कशी कर सकते हैं, मक्का से मदीना हिजरत की रूदाद बयान कर सकते हैं, मदीना में होने वाले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस्तिक़बाल का नक़्शा खींच सकते हैं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ऊँटनी ''क़सवा'' के हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि0 के दरवाज़े पर ठहरने का मंज़र बयान कर सकते हैं लेकिन अफसोस! कि वह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की घरेलू और समाजी जिन्दगी के बारे में बिल्कुल लाइल्म और खामोश नज़र आते हैं, हालांकि सीरते पाक का वह पहलू जो घरेलू और समाजी जिन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखता है, इंसानी जिन्दगी में बड़ा अहमियत का हामिल है, इबादात के मुआ़मले में सीरत यक़ीनन हमारी पूरी रहनुमाई करती है बल्कि इबादत को क़ाबिले क़ुबूल बनाने में सीरत का बुन्यादी किरदार है अगर इबादात में सुन्नतों का ख़याल न रखा जाये और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बताये हुए तरीक़े के मुताबिक़ इस इबादत को अन्जाम न दिया जाए तो वह इबादत बेरूह और बेजान है। और उस इबादत के वह असरात मुरत्तब नहीं हो सकते जिनका वादा अल्लाह ने फरमाया है।

लेकिन क्या आंहुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सारा वक़्त मस्जिदों में गुज़रा? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उन जरूरियात से मुबर्रा थे जो जरूरियात इंसानी ज़िन्दगी में पेश आती हैं? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी जिन्दगी के बेशतर लमहात सहराओं और ग़ारों में गुज़ारे जहां इंसानों से साबक़ा कम पड़ता है? अगर ऐसा होता तो एक आयत

जिस का तरजुमा यह है कि–

''तुम्हारे लिए अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिन्दगी में बेहतरीन नमूना है'' बेमअ़ने हो कर रह जाती है। यक़ीनन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की जिन्दगी में वह तमाम मसाइल पेश आए जो किसी भी इंसान को उम्र के किसी भी मरहले में पेश आ सकते हैं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का बचपन भी गुज़रा, जवानी भी गुज़री और जवानी के बाद का मरहला भी गुज़रा, बचपन की ख्वाहिशात, जवानी के तक़ाज़े और जवानी के बाद के मसाइल भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पेश आये, रहन–सहन, तर्जे–जिन्दगी और लेन देन के सिलसिले में भी आप रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मत के समाने एक नमूना पेश करके दिखा दिया, हमें उन नमूनों को भी सामने लाने की ज़रूरत है।

हम वुज़ू में ख्याल करते हैं सुन्नतों का, गुस्ल में एहतिमाम करते हैं मसनून तरीक़ा अपनाने का, पानी पीते हैं तो कोशिश करते हैं कि बैठ कर पियें, और तीन सांसों में पियें, खाने में दायां हाथ इस्तेमाल करते हैं, प्लेट साफ करते हैं, उंगलियां चाटते हैं, खाने के बाद की दुआ पढ़ते हैं, क्योंकि हमारे प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हमें यह सब बताया, बल्कि करके सिखाया, लेकिन क्या हुज़ूरे पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ उन्हीं चीजों में हमारी रहनुमाई फरमाई जो हमारी इंफिरादी जिन्दगी से तअ़ल्लुक़ रखती हैं। और क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सिर्फ उन्हीं चीज़ों के सिलसिले में हमें हिदायत अ़ता फरमाई जिनको इबादात कहा जाता है?

क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में रहने के आदाब नहीं बताए? क्या आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सड़क पर चलने का तरीका बयान नहीं फरमाया? क्या रास्ते पर खड़े रहने वालों पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ ज़िम्मेदारियां नहीं डाली? क्या पड़ोसियों के साथ हुस्ने सुलूक की तालीम आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नहीं दी? क्या रास्ते से तकलीफदह चीज हटाने को सदक़ा नहीं क़रार दिया? क्या बीमार की इयादत की फज़ीलत के सिलसिले में ज़बाने नुबुव्वत खामोश है? क्या मुसलमान भाई से मुसकुरा कर मिलना बाइसे अज्र सवाब नहीं है? क्या नर्म दिली, नम्र मिज़ाजी तवाज़ो और इन्किसारी सिफाते नबविया में से नहीं है?

वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद किसने फरमाई? बीवी के हुकूक़ अदा करने पर ज़ोर किसने दिया? यतीमों, मिस्कीनों और बेवाओं की किफालत करने पर बशारत किसने दी? अमानतदार ताजिर के लिए हश्र की गर्मी में अर्श के साये का वादा किसने किया? ग़ीबत, चुग़ल खोरी, इल्ज़ाम तराशी और ऐब जोई को बदतरीन गुनाह किसने क़रार दिया? झूठ,

खयानत और वादा खिलाफी को निफाक़ की अलामतों में किसने शुमार किया?

ज़रा सोचिए! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में खुशी के लम्हात भी आए, और हुज़्नों मलाल के भी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी चहेती बेटियों को दुल्हन बना कर रुख्सत भी किया और अपने लख्ते जिगर हज़रत इब्राहीम रज़ि0 को अपने हाथों कब्र में भी उतारा, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मैदाने जंग में इस्लामी लश्कर को आगे बढ़ते हुए भी देखा और पीछे हटते हुए भी, सुलह के वाक़ियात भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी में पेश आये और जंग के भी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान छिड़कने वाले सहाबा किराम रज़ि0 की महब्बत भी देखी और खून के प्यासे दुश्मनों की अदावत भी। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुआफ करके भी दिखाया और तन्बीह फरमा कर भी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का साबिक़ा कैदियों से भी पड़ा और गुलामों से भी, उमरा से भी और सरदारों से भी, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुद भूखे रह कर दूसरों को खिलाने का सबक़ दिया, अपनों को महरूम रख कर ग़ैरों को नवाजने का नमूना पेश किया, पसीना खुश्क होने से पहले मज़दूर को मज़दूरी देने की तल्क़ीन की, खवातीन के साथ नर्मी बरतने का हुक्म दिया, अमीर की इताअ़त को लाज़िम करार दिया।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मजलिस के बारे में आता है कि वह इल्मो हया की मजलिस होती थी, न उसमें किसी पर तोहमत लगती थी ना इल्ज़ाम तराशी होती थी, न किसी का राज़ खुलता था, ना किसी के ऐब की चर्चा होती थी, ना किसी की रुसवाई का किसी के दिल में कोई ख्याल आता था, उसमें सब्र की तल्क़ीन होती थी, अमानत व दयानतदारी का सबक़ होता था, इल्मो हिकमत की बातें होती थीं, उसमें हर बड़ा क़ाबिले एहतिराम और हर छोटा लायक़ इनायत व शफक़त।

ज़रा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर पर नज़र डालिए, सिर्फ एक कमरा है वह भी इतना तंग की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ पढ़ते तो हज़रत आयशा सिद्दीका रज़ियल्लाहु अन्हा अपने पांव नहीं फैला सकती थीं, इसलिए रिवायात में आता है कि जब तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क़याम में या रुकूअ़ में होते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 अपने पांव फैलाए रहतीं और जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सजदे में जाते तो हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि0 आपने पांव समेट लेतीं, तब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सजदा फरमाते, इतना तंग मकान और इतनी तंग आराम गाह थी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की, उस मकान के फर्नीचर

एलाने मिलकियत व अन्य विवरण फार्म-4 नियम-8

प्रकाशन का स्थान	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, नदवतुल उलमा, बादशाहबाग, लखनऊ
प्रकाशन अवधि	–	मासिक
सम्पादक	–	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	अहाता दारुल उलूम, नदवतुल उलमा, लखनऊ
मुद्रक एवं प्रकाशक	–	अतहर हुसैन
राष्ट्रीयता	–	भारतीय
पता	–	21–अदनान पल्ली निकट, हिरा पब्लिक स्कूल, रिंग रोड, दुबग्गा, डाक घर, काकोरी, लखनऊ
मालिक का नाम	–	मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

मैं, अतहर हुसैन प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त विवरण मेरे विश्वास व जानकारी में सही हैं।

को तो देखिए, सिर्फ और सिर्फ दो चीजें थी, एक तख़्त और एक कुर्सी, और कुर्सी भी ऐसी कि जिसके चार पाए तो थे लेकिन लकड़ी के नहीं लोहे के थे, बाक़ी उसमें लकड़ी फिट थी, उन दो चीज़ों के अलावह कोई चीज़ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर में बतौर फर्नीचर नहीं था।

दरवाज़े पर पर्दा ज़रूर था लेकिन वह भी बहुत मामूली, आराइश के लिए नही, सजावट के लिए, मकान की ज़ेबो ज़ीनत बढ़ाने के लिए नहीं, बल्कि सिर्फ इसलिए कि अचानक दरवाज़ा खुलने पर बेपरदगी न हो और दरवाज़े पर कोई खड़ा हो जाए तो सामना ना हो।

मस्जिदे नबवी में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आराम फरमा हैं, जिस्मे अतहर के नीचे खजूर की एक चटाई है, ना सर के नीचे कोई तकिया है ना चेहरा अनवर के नीचे कोई चादर, खजूर की उस सख़्त और खुरदरी चटाई के निशानात रूखे अनवर पर नुमायां नज़र आ रहे हैं, हज़रत उमर रज़ि0 का गुज़र होता है आप को इस हाल में लेटा देखते हैं तो आंखों में आंसू भर आते हैं और अर्ज़ करते हैं ऐ अल्लाह के रसूल! आप महबूबे खुदा हो कर इतनी सख़्त खुरदरी चटाई पर लेटे हैं कि आपके चेहरे अनवर पर उसके निशानात पड़ गये हैं।

जारी.....

एक औरत का दर्द भरा खत

—इदारा

बहुत बार सोचा कि यह खत लिखूं या न लिखूं क्योंकि मुझे डर है कि मेरी यह बातें कुछ औरतें पसंद न करें बल्कि शायद वह मुझे पागल समझें लेकिन फिर भी जो मुझे हक़ और सच लगा पूरे यकीन के साथ होश व हवास में लिख रही हूं, मेरी इन बातों को शायद वह औरतें अच्छी तरह समझ पाएंगी जो मेरी तरह कुंवारी घरों में बैठी बैठी बुढ़ापे की सरहदों को छू रही हैं, बहर हाल मैं अपना मुख़्तसर किस्सा लिखती हूं शायद मेरा यह दर्दे दिल किसी बहन की ज़िन्दगी संवारने का ज़रिया बन जाए और मुझे इसकी बरकत से हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवीयों के पड़ोस में जन्नतुल फिरदौस में ठिकाना मिल जाए।

मेरी उम्र जब 20 साल हो गई तो मैं भी आम लड़कियों की तरह अपनी शादी के सुहाने सपने देखा करती और सुहाने सुहाने ख्यालों की दुन्या में मग्न रहती कि मेरा शौहर ऐसा ऐसा होगा, हम मिल जुल कर ऐसे रहेंगे फिर हमारे बच्चे होंगे और हम उनकी ऐसी ऐसी अच्छी परवरिश करेंगे वग़ैरह वग़ैरह और मैं उन लड़कियों में से थी जो ज़ियादा शादियां करने वाले मर्द हज़रात को नापसंद करती हैं और अल्लाह तआला के इस हुक्म की बहुत ज़ियादा मुख़ालफत किया करती हैं, क्योंकि मैं इसे जुल्म समझती थी।

अगर मुझे किसी मर्द के बारे में पता चलता कि वह दूसरी शादी करना चाहता है तो मैं उसकी इतनी मुखालफत करती कि उसे नानी याद आ जाती और मैं उसे बहुत बद दुआएं देने लगती और इस सिलसिले में मेरे अपने भाईयों और चचा से भी अकसर बहस रहती वह मुझे ज़ियादा शादियों की अहमियत के बारे में बताते, कुर्आन व हदीस की रोशनी में और मौजूदा हालात के एतिबार से समझाने की बहुत कोशिश करते मगर मुझे कुछ समझ न आती बल्कि मैं उन्हें भी चुप करवा देती।

इसी तरह दिन हफ्ते, महीने और साल गुज़रते गए मेरी उम्र 30 से ज़ियादा हो गई और इन्तिज़ार करते करते मेरे सर पर चांदी चमकने लगी, लेकिन मेरे ख़्वाबों का शहज़ादा न आया।

या अल्लाह मैं क्या करूं? जी चाहता है कि घर से बाहर निकल कर आवाज़ें लगाऊँ कि मुझे शौहर की तलाश है, जवानी के शुरु से ले कर अब तक मैंने नफ़्स व शैतान का किस तरह मुक़ाबला किया इस बेहूदगी और बेहयाई के माहौल में कैसे बची रही, मैं इसे सिर्फ और सिर्फ अल्लाह का फ़ज़्ल और वालिदैन की दुआएं ही समझती हूं वरना..... अगरचे घर वाले भाई वगैरह सब मेरी ज़रूरतों का ख़्याल करते हर तरह दिल बहलाने की कोशिश करते हैं मेरे साथ हंसते खेलते मजबूरन मुझे भी उनके साथ हंसी मज़ाक़ में शरीक होना पड़ता लेकिन मेरी वह हंसी

खोखली होती मुझे वह हदीस याद आती जिस का खुलासा कुछ यूं है कि बग़ैर शादी के औरत हो या मर्द मिस्कीन होते हैं और हक़ीक़त में मैं नेअ़मतों से भरे घर में मिस्कीन थी।

खुशी या ग़मी के प्रोग्राम में रिश्तेदार, दोस्त व अहबाब जमा होते तो जी चाहता कि उनको चीख चीख कर बताऊँ कि मुझे भी शौहर चाहिए लेकिन फिर सोचती कि लोग क्या कहेंगे? कि यह कैसी बेशर्म लड़की है, बस खामोशी और सब्र के सिवा कुछ भी चारा नहीं था।

जब मैं अपनी हमजोलियों, सहेलियों के बारे में सोचती कि वह तो अपने घरों में अपने शौहरों और बच्चों के साथ खुश व खुर्रम ज़िन्दगी बसर कर रही हैं तो मुझे अपनी इस फितरत के खिलाफ जिन्दगी पर बहुत गुस्सा आता, घर की महफिलों में सब के साथ मिल कर हंसती तो थी लेकिन मेरा दिल खून के आंसू रोता था, लड़के तोफिर भी अपनी शादी की ज़रूरत का एहसास घर वालों को दिला सकते हैं लेकिन लड़कियां अपनी फितरी शर्म व हया में ही घुटी दबी रहती हैं।

वह तो अल्लाह का शुक्र है कि मेरे बड़े भाई की शादी एक आलिमा लड़की से हो गई जो माशा अल्लाह दीनी और दुन्यावी उलूम के साथ साथ तक़्वा, पाकीज़गी और दूसरे अच्छे गुण भी थे, शादी के कुछ दिन बाद ही घर में मदरसतुल बनात (लड़कियों का मदरसा) शुरु कर दिया गया, मैं भी बी0ए0 के बाद खाली थी, तो मैं ने भी अपनी प्यारी भाभी के हुस्ने सलूक से मुतअस्सिर हो कर सब से पहले दाखिला ले लिया, उनकी तरग़ीबी बातें सुन कर मेरा कुछ ध्यान बटा, तसल्ली हुई और मदरसे की पढ़ाई के साथ उन्होंने कुछ मसनून दुआएं व अज़्कार भी बताए, जिन के पढ़ने से दिल को क़ाफी सुकून महसूस हुआ, वह तो मेरे लिए कोई रहमत का फरिश्ता ही साबित हुई, अगर वह न होती तो नजाने मैं किन गुनाहों की दलदल में धंस चुकी होती या खुदकुशी की हराम मौत मर कर जहन्नम की किसी वादी में दर्दनाक अज़ाब सह रही होती।

एक दिन मेरे बड़े भाई घर आए और बताया कि आज आप के रिश्ते के लिए कोई साहब आए थे लेकिन मैंने इन्कार कर दिया, मैंने तक़रीबन चीखते हुए पूछा आखिर क्यों? कहने लगे वह तो पहले ही शादी शुदा था, और मुझे आप का पता था कि आप कभी भी दूसरी शादी वाले मर्द को कुबूल नहीं करेंगी, आप तो दूसरी शादी करने वालों के सख़्त खिलाफ हैं, मैंने कहा नहीं भाई नहीं! अब वह बात नहीं, जब से मैंने भाभी जान के पास कुर्आन व हदीस का इल्म हासिल करना शुरु किया है सीरते नबवी पढ़ी है तो कुर्आन व हदीस के नूर से मेरे दिमाग़ की गिरहें खुलना शुरु हुई और मुझे अल्लाह तआला के इस हुक्म की हिकमतें समझ में आने लगीं,

अब तो मैं किसी मर्द की दूसरी क्या तीसरी या चौथी बीवी बनने के लिए भी खुशी से तैयार हूं, और मैंने जो अब तक अल्लाह तआला के इस हुक्म की मुख़ालफत की उस पर मैं इस्तिगफ़ार करती हूं।

अल्लाह की कसम! जब तक ज़ियादा शादियों वाला अल्लाह का हुक्म हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सहाबा–ए–किराम रज़ि0 के दौर की तरह आम नहीं होगा, निकाह आसान हो ही नहीं सकता, जिस मर्द ने पूरी ज़िन्दगी एक ही शादी करने का फैसला और पक्का इरादा कर रखा है वह कभी भी किसी मुतल्लक़ा (तलाक़ शुदा), बेवा, गरीब, मिस्कीन या किसी भी एतिबार से किसी कमी का शिकार लड़की से शादी नहीं करेगा।

एक दिन कुर्आन पाक की तिलावत करते हुए यह आयत नज़र से गुजरी ''यह बर्बादी इसलिए है कि वह लोग अल्लाह तआ़ला के नाज़िल किये हुए अहकाम से नाखुश हुए फिर अल्लाह तआला ने भी उनके आमाल जाये कर दिये'', इस पर तो मेरे रोंगटे ही खड़े हो गए, मैंने तो अल्लाह तआ़ला के इस हुक्म को न सिर्फ नापसंद समझा बल्कि इसकी बहुत ज़ियादा मुख़ालफत करती थी, अल्लाह मुझे माफ फरमाए, मैं इस खत के जरिये से मर्द हज़रात तक यह पैग़ाम पहुंचाना चाहती हूं कि–

अगर अद्ल व इन्साफ करने की नियत और इस्तिताअ़त हो तो आप ज़रूर अल्लाह तआ़ला के इस हुक्म को ज़िन्दा कीजिए, दो तीन और चार शादियों को बढ़ावा दीजिए और दुखी दिलों की दुआ़ लीजिए, बाक़ी जो औरत आएगी अपना नसीब साथ ले कर आएगी और उस से जो औलाद होगी वह भी अपना नसीब साथ लाएगी, रिज़्क़ देने वाला तो सिर्फ अल्लाह है और उसी अल्लाह ने कुर्आन में शादियों की बरकत से ग़नी करने का वादा किया है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी तंगदस्ती को दूर करने का यही नुस्खा बताया है।

इस मौज़ू पर एक मिसाल दिमाग़ में आई कि एक बार हुकूमत ने फौजियों को डूबते हुओं को बचाने की ऐसी ट्रेनिंग दी कि हर फौजी एक वक़्त में चार चार डूबते हुओं को बचा सके, अचानक जोरदार सैलाब आ गया बेशुमार लोग सैलाब की ज़द में आ कर डूबने लगे हुकूमत ने फौरी एक्शन लेते हुए फौज को भेजा कि जा कर ज़ियादा से ज़ियादा लोगों को बचाऐं, अब यह फौजी जवान पानी में कूद कर बजाए चार चार आदमियों को निकालने के सिर्फ एक एक को निकालने पर इक्तिफा करें और बाक़ी चिल्लाते रहें बचाओ बचाओ, हमें भी बचाओ और वह उन बेचारों की सुनी अनसुनी कर दें और उन्हें आसानी से डूबने और मरने दें तो आप उन्हें क्या कहेंगे? हुकूमत उनहें क्या कहेगी? क्या हुकूमत उन्हें शाबाशी देगी? या दूसरी सूरत अगर किसी रहम दिल फौजी को उन पर तरस आ जाए और वह किसी और डूबते को बचाने लगे तो पहले जो चिमटा हुआ है वह कहे कि

खबरदार किसी और की तरफ हाथ बढ़ाया, बस मुझे ही बचाओ बाक़ी डूबते मरते रहें, उनकी तरफ देखो भी मत, अब उसे क्या कहा जाएगा?

कहीं इस मामले में हमारे यहां भी तो कुछ ऐसा नहीं हो रहा, अल्लाह तआला फरमातें हैं–

अनुवादः *''तो जो औरतें तुम्हें पसंद आएं उनमें दो और तीन और चार तक से निकाह कर सकते हो और अगर तुम्हें डर हो कि तुम बराबरी न कर सकोगे तो एक ही पर या लौंडियों पर संतोष करो जो तुम्हारी मिलकियत में हों।*

(सूरः अल निसा–3)

''कुर्आने करीम में एक से ज़ियादा शादियों वाली इस आयत में बिल्कुल यही साफ तौर पर नज़र आ रहा है कि अद्ल न कर सको तो एक पर इक्तिफा करना जायज़ है। ज़रूरत पड़ने पर चार शादियों तक की इजाज़त है। एक से ज़ियादा शादियों की दलील कुर्आन की आयत, हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इजाज़त, ख़ुलफा–ए–राशिदीन अबू बक्र, उमर, उस्मान और अली रज़ि0 और अकसर सहाब–ए –किराम रज़ि0 का अमल है, इन में से कोई एक भी हमारे मर्दों की तरह एक वाला नहीं सब के सब ज़ियादा शादियों वाले हैं, अब अगर अपनी दीनी और दुन्यावी मसरुफियतों का बहाना बनायें तो भी सहाबा की जिन्दगियों को देखें, वह आप से ज़ियादा दीन और दुन्या के कामों में लगे हुए थे, लेकिन फिर भी उन्होंने अल्लाह तआला के इस फरमान की मंशा को समझते हुए एक से ज़ियादा निकाह किये पिछले दिनों सोशल मीडिया पर कुछ अरब औरतें पीले कार्ड उठाए बाक़ायदा जुलूस की शक्ल में निकल कर मर्दों को झिंझोड़ते हुए कह रही थीं कि ए मर्दो! अगर तुम हकीकत में मर्द हो तो एक से ज़ियादा निकाह करो और ऐसी जवान लड़कियों से निकाह करो जिनका निकाह न हो रहा हो चाहे वह कुँवारी हों, तलाक़ पाई हों और चाहे बेवा हों। जरूरी नहीं कि आप की पहली बीवी में कोई ऐब या कमी हो तो ही आप यह कदम उठायें, इसके बगैर भी आप दूसरी बेनिकाही जवान लड़कियों का मसला हल करने के लिए दूसरी शादी करें।

और कुछ बातें मैं उन मुसलमान बहनों से करना चाहती हूं जिन को अल्लाह तआला ने शौहर से नवाजा है वह अल्लाह का शुक्र अदा करें कि वह मुझ जैसी बेनिकाह मिस्कीन औरतों में से नहीं हैं, आप को शायद अंदाजा ही नहीं कि बेनिकाह रहने में कैसी कैसी मशक्कतों और तकलीफों से गुजरना पड़ता है, ठीक है आप पर भी कुछ मशक़्क़तें आती रहती हैं इन पर तो आप को इंशाअल्लाह अज्र मिलेगा ही लेकिन यह फितरत के ख़िलाफ बग़ैर निकाह के रहना बहुत ज़ियादा ख़तरनाक है, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि अगर आपके शौहर इस मुबारक सुन्नत को ज़िन्दा करना चाहते हैं जिसे लोग मेरी तरह अपनी जिहालत और नादानी की वजह से गुनाह समझते हैं तो बराहे मेहरबानी इन के लिए हरगिज़ हरगिज़ रुकावट न बनिये।

हज़रत आइशा रज़ि0 को पता चल जाता था यह जो औरत हुजूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाजिर हो रही है, इस से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निकाह कर सकते हैं लेकिन वह तो कभी भी रुकावट नहीं बनीं और फिर आप उन औरतों से निकाह कर भी लेते, आप भी हज़रत आइशा रज़ि0 के नक़्शे क़दम पर चलते हुए अगर रुकावट नहीं बनेंगी तो अल्लाह तआ़ला उन के साथ आप को भी हश्र में बेहतरीन बदला अता फरमाऐंगे, अल्लाह से डरिये..... अल्लाह से डरिये..... अल्लाह से डरिये..... अल्लाह के हुक्म को पूरा करने में अपने शौहर की सहायता करें और बेनिकाही जवान औरतों में से अपनी ताक़त के बक़द्र कुछ तो कमी करने का ज़रिया बनिये।

इस बात को बुरा समझने वाली मेरी बहनो! अल्लाह न करे कि अगर आप का शौहर अल्लाह को प्यारा हो जाए और आप ठीक जवानी में बेवा हो जाऐं और आप से कोई कुंवारा मर्द शादी करने को तैयार न हो तो फिर आप पर क्या बीतेगी।

ज़रा सोचिए! हदीस के मुताबिक़ हम उस वक़्त तक पूरे तौर पर मोमिन नहीं हो सकते जब तक जो अपने लिए पसंद करते हैं, वही दूसरों के लिए पसंद न करने लगें, लिहाज़ा जैसे आप को अपने शौहर और बच्चों के साथ रहना पसंद है इसी तरह आप दूसरी औरतों के लिए भी यह पसंद कीजिए, और अगर इस सिलसिले में आप को कोई कुरबानी देनी पड़े तो अल्लाह की रज़ा के लिए कुबूल कीजिए और फिर अल्लाह तआला के ख़ज़ानों से दुन्या व आखिरत की खुशियां हासिल कीजिए।

मेरी प्यारी बहनो! यह दुन्या ख़त्म होने वाली और आरज़ी है और आज़माइश की जगह है, आखिरत बाक़ी और हमेशा हमेश के लिए और दारुल इनआ़म (बदले की जगह) है, इस हमदर्दी और कुरबानी पर आख़िरत में जो अल्लाह तआ़ला आप को इनआ़मात से नवाज़ेंगे, आप उनका अंदाज़ा ही नहीं लगा सकतीं, अल्लाह तआ़ला के दीदार की एक झलक आप को इस सिलसिले में आने वाली तमाम मुश्किलों, मशक़्क़तों और तकलीफ़ों को भुला देगी, मेरी दिल से दुआ है कि अल्लाह करे कि मेरी किसी बहन को अल्लाह के इस हुक्म को पूरा करने और फरोग़ देने पर कभी कोई तकलीफ न आए, बल्कि राहत ही मिलती रहे।

अल्लाह तआ़ला अपने बन्दों से एक मां से भी हजार गुना ज़ियादा महब्बत करते हैं, अल्लाह तआ़ला के हर हर हुक्म में उसकी तरफ से रहमतें और बरकतें मिलती रहेंगी, नबी–ए–करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम भी रहमतुल लिलआलमीन हैं वह कभी भी हमें ऐसा हुक्म नहीं दे सकते जो ज़र्रा बराबर भी हमारे लिए मुश्किल और परेशानी का कारण बने, अल्लाह तआला हमारा हामी और नासिर (हिमायत करने वाला और सहायता करने वाला) हो और अल्लाह मेरे जैसी तमाम बहनों को ख़ैर के रिश्ते अता फरमाए।

एक किताब में ज़ियादा शादियां करने के फजाइल और फायदे पढ़े वह भी आप की ख़िदमत में पेश कर दूँ।

० एक से ज़ियादा शादियां करने पर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत के

ज़ियादा होने वाली चाहत पूरी होगी।

० ज़ियादा बीवीयों के मिल कर रहने में दीन की मेहनत करना आसान हो सकती है।

० सौकन बन कर रहने से अज़वाज–ए–मुतह्हरात व सहाबीयात की मुशाबहत (समानता) और उसकी बरकत से जन्नत में उनका साथ हमेशा हमेश के लिए मिल सकता है, अगर इसकी वजह से अल्लाह न करे कुछ परेशानी इस दुन्या में आ भी गई तो आख़िरत की हमेशा हमेश की लामहदूद (जो कभी न खत्म होने वाली) ज़िन्दगी में अज़वाज–ए–मुतह्हरात के पड़ोस वाली जन्नत की एक झलक सारे दुखों को भुला सकती है।

० पहली बीवी मेज़बान बनने का सवाब पाती है, अगरचे यह हुक्म औरतों को थोड़ा मुश्किल ज़रूर लगता है, लेकिन (और मैं तमाम अहकाम को कुबूल करता हूं) में जो सारे अहकामात जो नफ़्स को पसंद हों या नापसंद हों सब ही अहकामात को कुबूल करने का जो दावा है उसकी दलील देने का मौक़ा मिलता है।

० इसको बढ़ावा देने से बेवाओं, तलाक़ शुदा औरतों और शक्ल व सूरत या जात पात वगैरह किसी भी कमी का शिकार औरतों के लिए भी निकाह करना आसान हो सकता है, क्योंकि एक ही निकाह पर इक्तिफा करने का जो मर्द फैसला करता है तो वह हर एतबार से परफेक्ट ही को पसंद करेगा, तो इस तरह आप खुदकुशी और ग़लत रास्तों पर चलने वाली मजबूर बहनों को हलाल रास्ते मुहैया करने का सवाब पा सकती हैं।

० इस हलाल रास्ते के बन्द हो जाने की वजह से बेशुमार मर्द हराम और ग़लत रास्तों से अपनी ख़्वाहिशों को पूरी करने पर मजबूर हैं, तो जब मर्दों को निकाह कर के हलाल तरीक़े से अपनी ख़्वाहिश पूरी करने पर हदीसे पाक की रू से सद्क़े का सवाब मिलेगा तो इसमें पहली बीवी जो खुशी से इजाज़त देती है उसको भी पूरा पूरा सवाब मिलेगा।

० मेरी नौजवान लड़कियों और लड़कों के वालिदैन से दर्दमन्दाना गुज़ारिश है कि मेरे इस दर्द भरे ख़त को अपने बेटे या बेटी की तरफ से समझिये, अल्लाह के लिए तमाम रस्म व रिवाज (जो अपने आप बना लिये गए हैं, शरीअ़त में इनका कोई सुबूत नहीं, अकसर रस्म व रिवाज तो हिन्दुओं वगैरा से लिए गये हैं) इन सब से तौबा कीजिए, शादी को आसान बना कर इसकी बरकतें देखिये।

यह तो हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इरशाद है जिसका मतलब यह है कि बरकत वाला निकाह वह है जिस में कम से कम ख़र्चा हो, चुनांचे लड़के वाले लड़की वालों के लिए और लड़की वाले लड़के वालों के लिए आसानियां पैदा करें, ताकि निकाह में कम से कम ख़र्चा हो, अल्लाह पर भरोसा कीजिए और देखिए कि अल्लाह तआ़ला कैसे अपना वादा पूरा करते हुए आप के लिए काफी हो जाते हैं।

अस्सलामु अलैकुम आप की गुमनाम बहन।

(माहनामा अज़ाने हिन्द मई 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

उर्दू सीखये

—इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढये।

अच्छे बच्चों के लिए कुछ शिक्षाएं

अच्छी अम्मा मुझे बता दो अभी, क्यों है बच्चे की ममता इतनी
اچھّی اماں مجھے بتادو ابھی، کیوں ہے بچّہ کی ممتا اتنی
तुझको बच्चे से क्यों ये उल्फत है, किस लिए इस क़दर महब्बत है
تم کو بچّہ سے کیوں یہ الفت ہے، کس لیئے اس قدر محبت ہے
माँ ने बच्चे को यूं जवाब दिया ,हैफ़ तुम जानते नहीं बेटा
ماں نے بچّے کو یوں جواب دیا، حیف! تم جانتے نہیں بیٹا!
कैसा लेटा है यह खुश व शुर्रम, न कोई फिक्र है न कोई ग़म
کیسا لیٹا ہے یہ خوش وخرّم، نہ کوئی فکر ہے نہ کوئی غم!
ना तो रोता ना बिलबिलाता है, गोद में क्या हुमक के आता है
نہ تو روتا نہ بلبلاتا ہے، گود میں کیا ہمک کے آتا ہے
मुसकराता है क्या ही खुश हो कर, जैसे चिड़िया मगन हो डाली पर
مسکراتا ہے کیا ہی خوش ہوکر، جیسے چڑیا مگن ہو ڈالی پر
जब कि सोने का वक़्त आता है, मेरे सीने से चिमट जाता है
جب کہ سونے کا وقت آتا ہے، میرے سینے سے چمٹ جاتا ہے
जब कि आँखों में नींद आती है, बिस्तरा उसका मेरी छाती है
جب کہ آنکھوں میں نیند آتی ہے، بستر اسکا میری چھاتی ہے
नींद ले कर हंसी शुखी से उठा, फूल गोया खिला चमेली का
نیند لے کر ہنسی خوشی سے اٹھا، پھول گویا کھلا چمیلی کا!
लग गयी भूक कह नही सकता, प्यारी नज़रों से है मुझे तकता
لگ گئی بھوک کہہ نہیں سکتا، پیاری نظروں سے ہے مجھے تکتا
प्यार का मेरे बस यही है सबब, नहीं आता बयान में मतलब
پیار کا میرے بس یہی ہے سبب، نہیں آتا بیان میں مطلب